ललित-शिक्षावली

प्रथम भाग

श्रीयुत

सरदार बहादुर निज़ामशाह साहिब कुटरू

मध्य प्रदेश

द्वारा रचित

—:o:—

और

इंडियन प्रेस, प्रयाग में मुद्रित

१९१६

श्रीगणेशाय नमः

ललितशिक्षावली

प्रथम भाग

लेखक व प्रकाशक

श्रीयुत सरदार बहादुर निज़ामशाह साहिब कुटरू
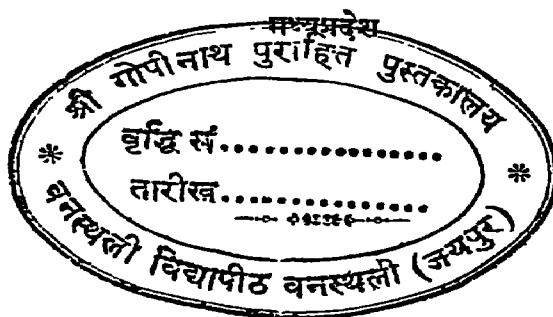
इंडियन प्रेस, प्रयाग में मुद्रित

प्रथम संस्करण १००० प्रति | सन् १९१६ | मूल्य ।) चार आने एक प्रति

"कोटर-वासी नर-कुञ्जर !

हुए आप "सरदार बहादुर" इसकी आज बधाई है।
भाई का उत्कर्ष देख क्या मुदित न होता भाई है॥
यही प्रार्थना है उस विभु से उन्नति हो तव दिन दूनी।
जलती रहे हृदय आश्रम में मातृ-भक्ति की शुभ धूनी॥

बालपुर, चन्द्रपुर
बिलासपुर C.P.
१५' १२' ११

अकिञ्चन
पाण्डेय लोचनप्रसाद"

—:○:—

मम प्रिय पाण्डेय जी,

आप के उपरोक्त पत्र का उत्तर देने में मुझे पूरे चार साल, सात महीने और बीस दिन लगे। मेरी इस कुम्भकरणी निद्रा के लिए मैं आप से क्षमा चाहता हूँ और उक्तपत्र के उत्तर स्वरूप यह "ललितशिक्षावली" प्रथम भाग की एक प्रति आप के पास भेजता हूँ। कृपया इसके गुणावगुण से मुझे सूचित कीजिए।

आपका
निज़ामशाह कुटरू

३१-८-१९१६

❁ भूमिका ❁

इस "ललितशिक्षावली" नामक पुस्तक के लिखने का मतलब केवल अपने लिखने पढ़ने का शौक़ पूरा करना है। दूसरा मतलब यह है कि आज कल जो हिन्दी-संसार हिन्दी को सारे भारतवर्ष की राष्ट्र-भाषा बनाने के लिए तन, मन, धन, से लगा हुआ है—इस शुभ कार्य्य में मेरे ऐसे क्षुद्र लेखक को भी सम्मिलित होकर हिन्दी की कुछ सेवा करना है।

"ललितशिक्षावली" का यह प्रथम भाग है। यथाशक्ति यह तीन चार भागों में समाप्त की जावेगी। इसमें, (१) राजभक्ति, (२) देशभक्ति; (३) तनभक्ति, (४) मनभक्ति और (५) धनभक्ति सम्बन्धिनी उत्तम उत्तम शिक्षाप्रद ललित कथाएँ रहेंगी।

(१) राजभक्ति के सम्बन्ध में यहाँ अधिक कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं; क्योंकि, हम भारतवासी सदा से अपने राजराजेश्वर को ईश्वर-तुल्य मानते आये हैं—केवल मानते ही नहीं आये; वरन् तन, मन, धन से सेवा भी करते आए हैं और सदा करेंगे। बड़ी ख़ुशी की बात है कि जब से हमारी शान्तिप्रिय और न्यायप्रिय ब्रिटिश सरकार दुष्ट जर्मनों की दुष्टता को दमन करने के लिए भारी युद्ध में लगी है तब से हम भारतवासी—क्या ग़रीब क्या अमीर सब एक-मत होकर अपनी सरकार की सेवा तन, मन, धन से कर रहे हैं। यही हमारा कर्त्तव्य भी है।

(२) देशभक्ति—आज कल देशभक्तों की भी भारत में कमी नहीं है, जो राजा और प्रजा दोनों की सेवा उत्तम रीति से कर रहे हैं।

पाठक शायद यह कहेंगे कि राजभक्ति और देशभक्ति तो हम जानते हैं, परन्तु तन-मन-धन भक्तियाँ क्या ? सो यह भी सुन लीजिए:—

(३) तनभक्ति—रहन-सहन खान-पान उत्तम रीति से रखना, जिससे तन आरोग्य रहे, यही तनभक्ति है।

(४) मनभक्ति—ईश्वर का डर रख कर सदा उत्तम कार्य करना, जिससे मन में शान्ति और आनन्द रहे, यही मनभक्ति है।

(५) धनभक्ति—मिहनत और इमानदारी से पैसा कमाना और संसार में आनन्द और इज़्ज़त से रहना और यथाशक्ति दूसरों को भी अपनी कमाई से सहायता पहुँचाना यही धनभक्ति है।

इन्हीं भक्तियों से सम्बन्ध रखने वाली नवीन नवीन कथाएँ "ललितशिक्षावली" में रहेंगी। मैं जानता हूँ कि इसमें रसिकता की मात्रा कुछ अधिक आगई है। परन्तु, इसके लिए किसी को घबराने की कोई बात नहीं; क्योंकि कालिदास जैसे महामहान् पंडित के ग्रंथों में और कई माननीय ग्रंथों में भी रसिकता की बातें कुछ कम नहीं हैं।

कुटरू | निवेदक
१९१६ | निज़ामशाह

काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से प्रार्थना।

इस पुस्तक की आठ सौ प्रतियाँ सभा को समर्पण की जाती हैं और सभा से प्रार्थना की जाती है कि वह इन प्रतियों को बिक्री कर के नागरी-प्रचार के किसी उत्तम कार्य में इनके दाम को ख़र्च करे।

निज़ामशाह
सभा का बाहरी सभासद।
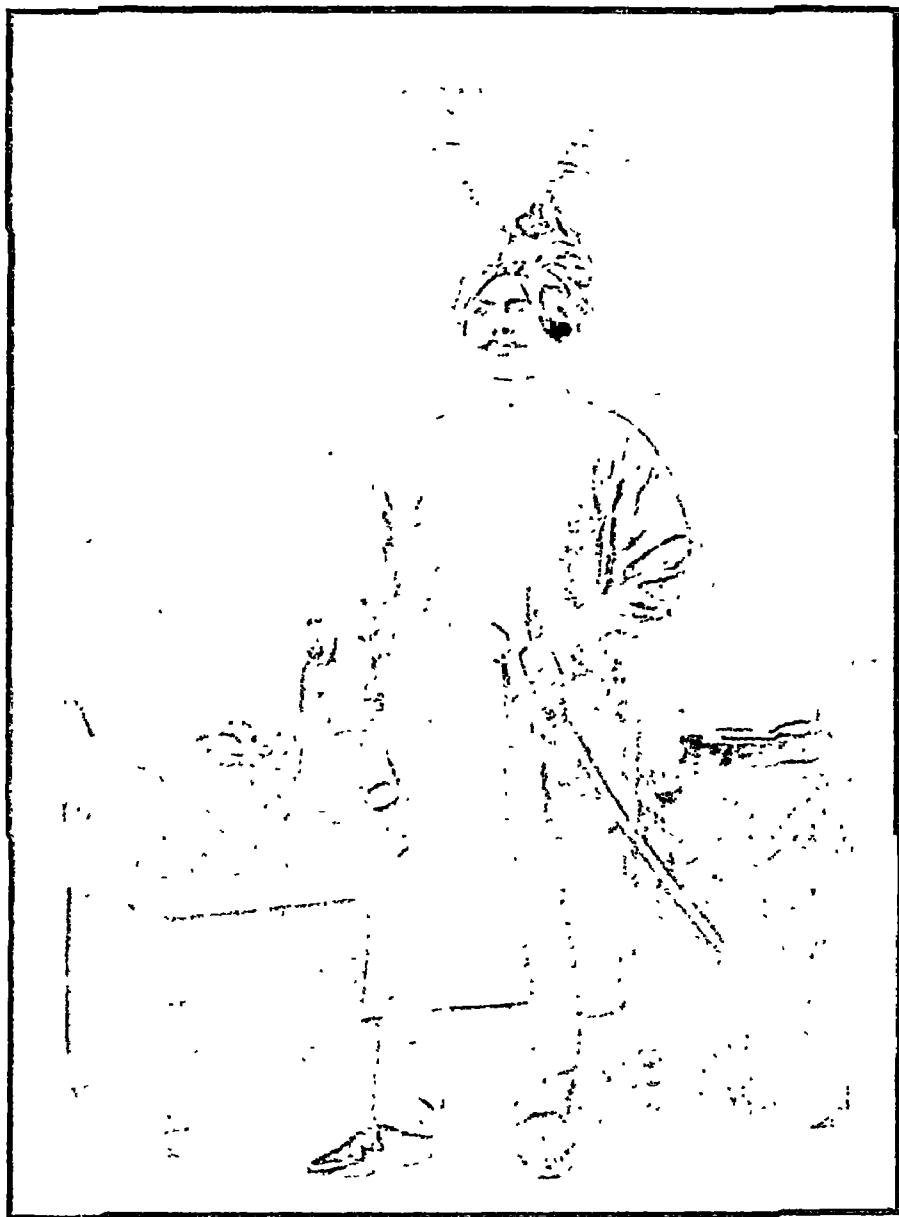
श्रीकालिका, रुद्रकालिका, सर्पकालिका, महाकालिका देवगढ़, सुरजागढ़,

सरदार बहादुर निज़ामशाह साहिब कुटरू, मध्यप्रदेश।

(मेम्बर आफ़ दी रायल सोसायटी आफ़ आर्ट्स लन्दन.)

इंडियन प्रेस, प्रयाग।

श्रीगणेशाय नमः

ललितशिक्षावली

प्रथम भाग ।

—:o◯:o—

एक राजकुमार का आत्म-वृत्तान्त ।

—:o:—

सदा सर्वदा संसार की स्थिति—इसकी गति एक सी नहीं रहती । यह परिवर्तनशील है। सैकड़ों हज़ारों वर्षों में आकाश पाताल का अन्तर हो जाना तो कोई बात ही नहीं. पल में प्रलय होना भी सम्भव है ।

यदि किसी मनुष्य की आयु हज़ारों की नहीं तो सौ दो सौ वर्षों की ही हो, तो उसे इस संसार की गति की विडम्बनाओं के सामने महा अहंकारी मनुष्य-जाति की तुच्छता बहुत कुछ दृष्टिगोचर हो जाय। अस्तु ।

इस समय मेरी अवस्था कोई दो सौ वर्ष की है। एक सौ वर्ष तक तो मैं सांसारिक जीवन व्यतीत करता रहा, कोई एक सौ साल हुए तब से संसार त्याग, हिमालय पर्वत की एक चोटी पर बैठ कर मैं हरि-भजन कर रहा हूँ ।

एक सौ वर्ष के मेरे संसारिक जीवन में क्या क्या घटनायें मुझ पर घटीं उन्हीं का वर्णन यहाँ पर किया जाता है।

मेरे जीवन का यह वर्णन यद्यपि पाठकों को उपदेशप्रद या लाभ-दायक न होगा तो भी मुझे आशा है कि इससे पाठकों को कुछ थोड़ा सा मनोरंजन अवश्य होगा।

....

सुप्रसिद्ध जापान देश में, जापान सागर के तट पर, एक विशाल नगरी में, मेरा जन्म एक नामी राज-घराने में हुआ।

पूर्व काल में जापान देश अनेक छोटी बड़ी रियासतों में बटा हुआ था। बादशाह नाम मात्र के लिए था। मेरे घराने की भी एक अच्छी रियासत थी जिसकी आमदनी क़रीब डेढ़ करोड़ रुपए की थी। मेरे घराने में मैं ही अकेला था और मैं ही रियासत का हक़दार था। इस लिए मुझे सुशिक्षित करने में कोई बात उठा नहीं रखी गई थी। उन दिनों में जापान ही में क्या सारी दुनिया में अकसर छोटी मोटी लड़ाइयाँ होती ही रहती थीं। इसलिए लड़ाई के सब हुनर मुझे शुरू ही से सिखाये गये थे। मैं भी अच्छा गठीला जवान था। बाण चलाने और निशाना लगाने में बहुत कम युवक मेरी बराबरी कर सकते थे। थोड़े ही दिनों में मेरी निशानेबाज़ी और अनेक अच्छे गुणों की तारीफ़ बहुत दूर दूर तक फैल गई; जिससे मेरे कुटुम्बी अत्यन्त आनन्दित रहते थे।

——:o:——

एक राजकुमार का आत्म-वृत्तान्त ।

मेरी बाल्यावस्था का पहिला भाग ।

जब मैं आठ दस वर्ष का था तब उत्तम उत्तम कहानियाँ—ऐति-हासिक कथाएं सुना कर मुझे शिक्षा देने का काम एक बुढ़िया दाई के ज़िम्मे था। दाई ख़ूब पढ़ी लिखी थी। कहानियाँ सुना कर बालकों को शिक्षा देना भी वह ख़ूब जानती थी। उसकी उमर उस वक़्त ६० वर्ष के क़रीब थी। मेरे साथ खेलने वाले बालक और मैं रोज़ दाई की कहानियाँ सुना करते थे। दाई अकसर दिया-बत्ती लगने के बाद से कहानियाँ सुनाना शुरू करती थी। कहानी सुनने के लिए हम सब बच्चे रोज वक़्त पर दाई को घेर लेते थे। जब कभी दाई कहानी सुनाना नहीं चाहती थी तब हम कहानी सुनाने के लिए दाई को तंग करते थे। एक दिन दाई ने कहा कि आज मैं कहानी नहीं सुनाऊँगी, तुम लोग खेलो।

हम सब बालक कहने लगे—दाई, दाई, देखो। अगर कहानी नहीं सुनाओगी तो देखो।

दाई—न सुनाऊँगी तो क्या करोगे ?

हम—कहानी नहीं सुनाओगी तो हम तुम्हारी छड़ी को तोड़ डालेंगे, तुम्हारी नस की डब्बी में मिर्ची मिला देवेंगे और ऐसा ऊधम करेंगे कि तुम सोने न पाओगी।

दाई—अगर ऐसा करोगे तो मैं चली जाऊँगी।

हम—कहाँ जाओगी ?

दाई—वैकुण्ठपुर।

हम—वैकुण्ठपुर में तुम्हारा कौन है ?

दाई—तुम से भी अच्छा मेरा एक लाड़ला वहाँ है .

हम—तुम फिर वहाँ से कब आओगी ?

दाई—फिर कभी न आऊँगी ।

हम—(सब के सब) नहीं नहीं दाई, तुम कहीं मत जाना; अब हम तुम्हारी छड़ी को नहीं तोड़ेंगे और नस में मिर्चा भी नहीं मिलावेंगे ।

दाई—तब तो ठीक है । अब मुझे एक कहानी याद आ गई है सो कहती हूँ सुनो ।

हम—(सब के सब) अच्छा, अच्छा, अच्छा, अच्छा ।

दाई—तुम सब के सब अच्छा अच्छा चिल्ला कर तो हल्ला करते हो, फिर कहानी कैसे सुनोगे । अब चुपचाप सुनो ।

... ...

सैकड़ों वर्ष की बात है कि चीन के उत्तर में जो मंगोलिया नाम का देश है, उसके मध्य में एक रियासत थी । उस रियासत के राजा का एक पुत्र था । उस का नाम राजकुमार चेसिल था । चेसिल बड़ा ही विद्वान्, गुणवान्, दयावान् और शीलवान् था । वह बड़ा हिम्मती और बहादुर भी था ।

उसी रियासत की राजधानी में एक करोड़पति वृद्ध महाजन भी रहता था । वृद्ध महाजन धन-दौलत से ख़ूब भरपूर था । उसका नाम बहुत दूर तक फैला हुआ था । उस महाजन की एक अति रूपवती कन्या थी । उसका नाम कुमारी मिसिल था । मिसिल रूप में तो थी ही, वह ख़ूब पढ़ी लिखी और चतुर भी थी ।

राजकुमार चेसिल के वृद्ध पिता और उस वृद्ध महाजन में बहुत गाढ़ी दोस्ती थी । वे दोनों एक उमर के थे । दोनों में यह सलाह हुई

कि राजकुमार चेसिल का विवाह कुमारी मिसिल के साथ किया जाय। शादी की बात तै हो गई और शादी के लिए तैयारियाँ भी होने लगीं।

उन दिनों में मंगोलिया में एक बड़ा भयानक डाकू था। उसके बहुत से साथी भी थे। वह अकसर बड़े बड़े करोड़पतियों के घरों पर डाका डालता था। मौका मिलने पर वह लड़के और लड़कियों को भी उठा ले जाता था और अपने यहाँ वह उन को दास दासियों के माफ़िक रखता था।

मंगोलिया देश भर के लोग उस डाकू के लिए हैरान थे। उसने देश भर में हल चल सी मचा रखी थी।

वह डाकू किसी तरह पकड़ा भी नहीं जाता था। उसको पकड़ने के लिए बड़ी बड़ी कोशिशें की जाती थीं मगर वह सपड़ में नहीं आता था।

एक दिन आधी रात को अवसर पा कर वह डाकू अपने साथियों के साथ उस बुड्ढे महाजन के घर में घुस गया और बहुत सा धन और विचारी मिसिल को भी अपने साथ ले भाग गया।

जब यह ख़बर राजकुमार चेसिल ने सुनी तब वह बहुत दुखित हुआ। क्योंकि उसका विवाह मिसिल के साथ उन्हीं दिनों में होने वाला था।

बहुत नाराज़ हो कर राजकुमार ने उस डाकू को पकड़ने का पक्का इरादा किया। अपने पिता से आज्ञा ले और बहुत से अच्छे अच्छे मज़बूत आदमी अपने साथ लेकर राजकुमार डाकू को पकड़ने के लिए घर से निकल पड़ा।

वह डाकू ऐसे घने जंगलों और पहाड़ों के बीच में रहता था जहाँ और किसी आदमी का पहुँचना महा कठिन था।

कई दिन चल कर राजकुमार उन पहाड़ों के पास पहुँचा जहाँ

डाकू अपने साथियों के साथ रहता था। दिन दहाड़े डाकुओं के पहाड़ों में घुसना बड़ा जान जोखिम का काम था, इसलिए राजकुमार ने अपना डेरा कुछ दूरी पर एक पहाड़ के आड़ में रखा।

राजकुमार चेसिल अपने साथियों से विचारने लगा कि डाकुओं के अड्डे तक पहुँचने का रास्ता किधर से होगा और किस तर्फ़ से उनके अड्डे पर एका एक हमला किया जा सकेगा। कुल मौक़ा एक रात भर में देख आने की सलाह ठहरी। अपने सब साथियों को डेरे में रख कर सिर्फ़ दो जवान आदमियों को साथ लेकर एक रात को राजकुमार निकला।

तीनों युवकों (राजकुमार और उसके दो साथी) ने कोई एक बजे रात को डाकुओं के पहाड़ों में घुसना शुरू किया।

महा घोर जंगल, फिर रात का वक्त, तीनों युवक चुपचाप दबे पैर जंगल में घुसते चले जारहे थे। जंगल के अन्दर कोई पाँच मील जाने पर उनको कुछ आवाज़ सुनाई दी।

आवाज़ सुनने के लिए तीनों एक जगह चुपचाप खड़े हो गये। आवाज़ ऐसी मालूम होती थी कि मानो कुछ आदमी ख़ूब सोए हुए ग़ुर्राटे ले रहे थे। राजकुमार चेसिल ने कहा कि हो न हो ये डाकू के साथी हैं जो अपने असल अड्डे के बाहर पहरा देने के लिए आकर सो गये हैं, ये अगर किसी तरह पकड़े जायेंगे तो डाकुओं का सारा हाल खुल जावेगा और उनका पता राई रत्ती लग जावेगा। यही सोच कर राजकुमार के साथ का एक युवक ख़ूब हिम्मत करके उस जगह तक गया जहाँ से वह आवाज़ आरही थी। वह युवक कुछ दूरी पर खड़ा होकर ख़ूब बारीकी से देखने लगा। चाँदनी के सबब से कहीं कहीं थोड़ा थोड़ा प्रकाश झाड़ों के पत्तों के भीतर से होकर ज़मीन पर पड़ता था। परन्तु उस प्रकाश से कोई चीज़ साफ़ साफ़ नहीं दिखाई देती थी।

कुछ देर तक ख़ूब देख कर उन युवक ने राजकुमार के पास आकर कहा कि तीन डाकू कम्मल ओढ़े हुए ख़ूब नींद में खुर्राटे ले रहे हैं, इसी वक्त उनको पकड़ लेना चाहिए।

राजकुमार तो मुस्तैद था ही, उसके साथी भी वैसे ही थे। एक एक डाकू को एक एक पकड़ने के लिए वे तैयार हुए और धीरे धीरे उन सोये हुओं के पास पहुंचे। तीनों युवक एक दम तीनों सोते हुओं पर कूद पड़े। भम्भ भम्भ भभ भम्भ !

बापरे बाप !! वे सोए हुए डाकू नहीं थे, वे भयानक भालू थे !!! फिर क्या था : ख़ूब लड़ाई हुई। राजकुमार ने अपने रीछ को घूंसों ही से मार डाला। उसके साथियों के दो भालू घायल होकर भाग गये।

समझे थे कि डाकू कम्मल ओढ़े सोए हुए थे लेकिन वे निकले भयानक भालू। ख़ैर, जान बची।

राजकुमार चैंसिल हिम्मत हारने वाला नहीं था, वह अपने साथियों को लेकर आगे बढ़ा।

तीनों युवक कोई एक घंटा तक चलने पाये थे कि इतने में सारा आकाश घनघोर बादलों से छा गया। एक तो रात का समय। दूसरे भयानक जन्तुओं और डाकुओं से भरे हुए अगम्य घने जंगलों में चलना !! तीसरे सारा आकाश घने बादलों से छाया हुआ !!! नीचे ऊपर और चारों ओर भयानक अंधेरे के सिवाय कुछ नहीं दिखाई देता था।

राजकुमार और उसके साथी हिम्मत हारने वाले नहीं थे। वे आगे बढ़ते ही गये। ख़ूब ज़ोर की आंधी हवा के साथ पानी बरसने लगा। आंधी के झोंकों से बड़े बड़े झाड़ टूट कर और उखड़ कर गिरने लगे। आंधी पानी के साथ साथ सेर सेर दो दो सेर भरके

ओले भी वरसने लगे। बड़े वड़े ओलों के वरसने से और झाड़ों के गिरने से उन युवकों को अपने प्राण बचाना कठिन हो गया। अपना अपना प्राण वचाने के लिए पत्थरों के खोहों और झाड़ों के खोलों में घुस जाने के लिए वे उस घोर अँधेरे में इधर उधर भटकने लगे। उस भयानक समय में उनको कुछ नहीं सूझता था—वे विचारे पागल से हो गये थे !!

राजकुमार का एक साथी हीचू नामका अँधेरे में विछड़ गया—वह वेपता हो गया ! वह कहाँ निकल गया और क्या हो गया सो कुछ नहीं मालूम होता था !! राजकुमार हीचू के लिए महा चिंता में पड़े !!!

आंधी पानी और वड़े वड़े ओलों से वचने के लिए राजकुमार और उसका दूसरा साथी माशो एक वड़े भारी झाड़ के खोल में घुस रहे थे कि उस खोल में रहने वाला एक वड़ा ज़हरीला सांप माशो को काट दिया। उसको ज़हर चढ़ गया और वह ज़मीन पर गिर पड़ा ! उसके मुँह से फेन निकलने लगा !!!

उस कठिन समय में राजकुमार कुछ नहीं कर सकता था। वह विवश था। अपने दोनों साथियों के लिए वह महा दुःखित हुआ ! वह अपने को नहीं सम्हाल सका !! वह, अपने सच्चे अच्छे हिम्मत-वर साथियों के लिए रोने लगा !!!

कहते महा दुःख होता है कि इतने में एक वड़ा भारी ओला राजकुमार के सिर पर गिरा जिससे वह अचेत हो ज़मीन पर गिर पड़ा !!!

× × × × ×

ऐसा दुसह दुःख ईश्वर कभी किसी के दुश्मन को भी न देवे। ईश्वर की कृपा से कुछ देर के बाद राजकुमार सचेत हुआ। वह

बैठ गया। बैठ कर उसने अपने बदन को देखा तो सारा बदन पानी से तर बतर हो गया था और उसके सिर से ख़ून बह रहा था। उसने एक रूमाल से अपने सिर के घाव को अच्छी तरह बाँध लिया।

राजकुमार के सामने उसका साथी माशो सर्प-विष से अचेत पड़ा हुआ था। राजकुमार चेसिल वैद्यक-विद्या में भी बड़ा निपुण था। उसने एक जड़ी माशो को खिलादी, जिससे माशो का ज़हर उतरने लगा और वह कुछ कुछ हिलने डुलने लगा।

इतने में कुछ दूरी पर एक आदमी के आर्त्तनाद से रोने की आवाज़ राजकुमार को सुनाई दी। राजकुमार ने समझ लिया कि रोने वाला हीचू है। राजकुमार ने माशो को एक खुराक दवाई और खिलादी और उसको वहीं छोड़ कर जिधर से रोने की आवाज़ आ रही थी उधर चला। चलते चलते वह वहाँ पहुँच गया। रोने की आवाज़ एक खोह के भीतर से आ रही थी।

राजकुमार चुपचाप दबे पैर खोह के पास तक गया और उसने कहा—खोह के अन्दर कौन हो निकलो। खोह के अन्दर से—मैं हूँ; मैं। आव; मारो।

राजकुमार आवाज़ नहीं पहिचान सका। उसने डपट कर कहा:— "निकल बाहर; दुष्ट, चोर, डाकू, राक्षस कहीं का, यद्यपि ओले की चोट से मेरे सिर में भारी घाव हो गया है तथापि आज तेरा काम पूरा किये न छोड़ूंगा !!

खोह के अंदर से—(अत्यन्त आर्त्तनाद से) "आव आव मारो मारो। अब मैं भी जीना नहीं चाहती। हे ईश्वर ! हे भगवान ! तू ही मेरे प्राण क्यों नहीं लेलेता; क्या तू फिर भी मुझे दुष्ट डाकू के हाथ में देदेगा ? तब तो मैं इसी चट्टान से अपना सिर फोड़ कर मरजाती हूँ और सदा के लिए इस दुःख-पूर्ण संसार को छोड़

देती हूं। हे राजकुमार चेसिल ! क्या तुमको अब तक मुझ अभागनी पर कुछ भी दया नहीं आई ?"

खोह के अन्दर की बातें सुन कर राजकुमार एक दम चकरा गया और दुःख से भरे हुए उन वचनों को सुन कर उसके हृदय में दया उमड़ आई और वह कुछ कुछ समझ गया कि खोह के अन्दर कौन है !

राजकुमार ने समीप जाकर पूछा "तुम कौन हो ! कुमारी मिसिल ?"

"तुम कौन हो ?"

"मैं राजकुमार चेसिल"

"हे राजकुमार ! यदि तुम सचमुच राजकुमार चेसिल हो तो दया करके मुझ अभागिनी को बचाओ; अब मैं इन दुसह दुःखों को नहीं सह सकती।"

समीप आकर राजकुमार ने देखा तो सचमुच कुमारी मिसिल थी !!!

राजकुमार ने कुमारी को अच्छी तरह धीरज दिया। उसने कुमारी से पूछा कि तुम किस तरह डाकुओं के क़ैद से निकल आई। डाकुओं के अड्डे से निकल आने का अपना सब वृत्तान्त कुमारी ने राजकुमार से कह सुनाया। कुमारी ने राजकुमार से यह भी कहा कि कई डाकू मेरी खोज में पड़े हुए हैं और आश्चर्य नहीं कि थोड़ी ही देर में डाकू अपने को पकड़ लेवें; आप सचेत रहिए। राजकुमार हिम्मती तो था ही; उसने कहा कि कोई फ़िकर नहीं, तुम धीरे धीरे मेरे साथ चली आओ।

कुमारी मिसिल को साथ ले राजकुमार इधर उधर बारीकी से देखता और सुनता हुआ उस जगह की ओर चला जहाँ वह माशो को छोड़ आया था।

महा अँधेरे में घने झाड़ों के भीतर से एकाएक एक आदमी आता

हुआ राजकुमार और कुमारी को दिखाई दिया। कुमारी ने धीरे से राजकुमार से कहा कि मेरी खोज में आया हुआ यह एक डाकू है इसे पकड़ो या मारो। इतने में वह आदमी इनके पास पहुँच गया। राजकुमार झपट कर उस पर कूद पड़ा। दोनों में कुश्तमकुश्ती होने लगी!! राजकुमार ने मौक़ा पाकर उसका गला पकड़ लिया और उसे ज़मीन पर गिरा कर उसकी छाती पर चढ़ बैठा !!!

वह आदमी बेचारा आँधी पानी और ओलों ही से अधमरा हो चुका था. उसकी छाती पर राजकुमार के चढ़ बैठने से उसका दम घुटने लगा। बड़ी कठिनता से उसने कहा "अरे दुष्ट ! इस समय यदि राजकुमार चेसिल यहाँ होता तो तेरा सिर धड़ से अलग कर देता।

राजकुमार ने बड़े आश्चर्य से कहा "मैं ही तो चेसिल हूँ" जवाब में उस आदमी ने कहा "अरे महाराज ! छोड़ो; मैं आपका हीचू हूँ। आँधी पानी के समय अँधेरे में मैं आप से बिछुड़ गया था"

× × × × × × × × × +

इस अद्भुत घटना से राजकुमार कुमारी और हीचू को बड़ा आश्चर्य हुआ—वे तीनों कठ-पुतलों के समान सन्न खा कर चुप खड़े हो गए।

अपने साथ बीता हुआ सब वृत्तान्त राजकुमार ने हीचू को कह सुनाया। वे तीनों मारो की ओर चले। वे मारो के समीप पहुँच गये।

राजकुमार की दवाई से मारो का सर्प-विष उतर गया था और वह ज़रा होश में आकर इधर उधर घूमने भी लग गया था। परन्तु वह दवाई के नशे में चूर था। क्योंकि "विषस्य विषमौषधम्" के अनुसार राजकुमार ने मारो को एक नशीली दवाई खिला दी थी। राजकुमार और हीचू के उसके पास पहुँचते ही डाकू डाकू कह कर वह उठा और अपनी तलवार फेरना शुरू कर दिया। राजकुमार और

हीचू ने माशो को बहुत कुछ समझाया मगर वह काहे को मानने वाला था। वह अपनी तलवार पागल के समान फेरता ही जाता था; क्योंकि वह दवाई के नशे में चूर था।

राजकुमार बड़ी हैरानी से कहने लगा "माशो, माशो! हम तुम्हारे ही साथी हैं; हम डाकू नहीं। मेरा नाम चेसिल है और इसका नाम हीचू। तुम यह क्या कर रहे हो, अब होश में आओ, तलवार रख दो"। मगर माशो काहे को मानता था; वह अपनी धुन में और भी ज़ोर शोर से तलवार फेरता ही जाता था और राजकुमार और हीचू को मारने के लिए उनके पास तक पहुँच भी जाता था।

माशो की हालत देख कर राजकुमार और हीचू बड़े हैरान थे। कुमारी मिसिल अत्यन्त आश्चर्य और अति दुःख से कहने लगी कि यह माशो नहीं होगा। शायद यह कोई डाकू ही होगा।

आख़िर हैरान हो—लाचार हो—राजकुमार ने अपनी तलवार निकाली। राजकुमार तलवार चलाने में बहुत निपुण था। उसने एक ही मार से माशो की तलवार के तीन टुकड़े कर दिये। माशो अस्त्र-हीन हो गया। तब हीचू ने उसे पकड़ लिया। राजकुमार ने माशो को और एक दवाई खिलादी, जिससे वह अच्छी तरह होश में आ गया और अपने साथियों को पहिचान लिया।

कैसी हैरानी थी !!!

\+ × × × + × + + × ×

तीनों दिलदार युवक हिम्मत ज़रा भी न हार कर कुमारी मिसिल को साथ लिए हुए फिर आगे बढ़े।

वे तीनों युवक चलते चलते अँधेरी रात में एक ऐसी जगह पर पहुँच गए जहाँ से एक क़दम भी आगे बढ़ाने के लिए जगह नहीं थी। वहाँ से वे युवक जब लौटे तो जिस रास्ते से वे वहाँ तक पहुँचे थे उस रास्ते

को भूल गए। वे जिधर देखते उधर खोह ही खोह दिखाई देता था। वे तीनों युवक हैरान होकर एक जगह बैठ गए। वे बहुत कुछ सोचे विचारे मगर कोई उपाय ठीक नहीं उतरा।

इतने में सवेरा हुआ। सवेरा होते ही जिस जगह पर तीनों युवक एक तरह से फँस गए थे उसके चारों ओर आदमियों का चिल्लाना सुनाई देने लगा। कोई चार पांच सौ डाकुओं को लेकर डाकूराज ने उन तीनों युवकों को घेर लिया। डाकुओं को देख कर तीनों युवक ज़रा सहम गए। मगर वे घबराए बिलकुल नहीं। किसी संकट को सामने देख कर घबराना वे जानते ही नहीं थे। संकट का सामना करना ही उन्होंने छुटपन से सीखा था। मृत्यु के लिये डरना या संकट के समय सांसें भरना वे जानते ही नहीं थे।

डाकूराज ने घेरने को तो उन तीन बहादुर युवकों को घेर लिया मगर उनके पास तक पहुँच कर उनको पकड़ने या मारने के लिये रास्ता बिलकुल नहीं था। सिर्फ़ एक तर्फ़ से बिलकुल सकरा रास्ता था। उसके दोनों तर्फ़ बहुत गहरे खोह थे। सकरा रास्ता जो था वह भी सिर्फ़ दो दो या तीन तीन आदमी कठिनता से एक साथ जाने लायक़ था। डाकू चोर तो थे ही, उन्होंने आमने सामने की लड़ाई कभी लड़ी नहीं थी। इसलिए उस सकरे रास्ते से होकर उन युवकों तक पहुँचने में वे बहुत डर गए। परन्तु डाकूराज के डर से तीन तीन आदमियों के कतार बाँध कर डाकुओं ने उन युवकों पर हमला करना शुरू किया। तीनों युवक तो तैयार थे ही, जितने जितने डाकू उनके पास पहुँचते गए उन सब को सीधा यमपुर भेजना युवकों ने शुरू किया।

कुछ ही घंटों में प्रायः सभी डाकू मारे गए। यह सब देख कर डाकूराज अपनी जान लेकर भागने लगा और थोड़े से डाकू जो बचे

थे वे भी भागने लगे। डाकूराज को भागते देख युवकों ने उसका पीछा किया और कुछ दूर पर उसे पकड़ कर बाँध लिया।

डाकूराज को एक झाड़ से कस कर बाँधे और आप एक झाड़ के नीचे सुस्ताने के लिये बैठ गये। तिनों युवक पसीने से तरबतर हो रहे थे।

डाकूराज कभी किसी के सपड़ में नहीं आया था, आज वह महा-घोर अंधकार में फँस गया। उसके होश-हवास उड़ गये। वह हैरान परेशान था!

डाकूराज की हालत देख कर दयावान् राजकुमार चेसिल को दया आई।

राजकुमार ने कहा—डाकूराज! आप घबराइए नहीं, आप के साथ हम बहुत अच्छा बर्ताव करेंगे।

डाकू—(दाँत पीसता हुआ) तुम कौन हमारे साथ अच्छा या बुरा बर्ताव करनेवाले, तुम नहीं जानते कि हम कौन हैं?

राजकुमार—देखिए डाकूराज! आखिर हम भी मनुष्य हैं, कुछ राक्षस नहीं; आप ख़ातिरजमा रखिए, आप को कोई तकलीफ़ नहीं दी जावेगी।

"इस सूर्यमंडल के नीचे आज तक कोई पैदा नहीं हुआ जो हमें तकलीफ़ दे सके"। यह कह डाकूराज ने जो एक ज़ोर का झटका मारा, सब रस्सियाँ टूट गईं और वह उछल कर युवकों पर हमला करने लगा। बमुश्किल डाकूराज फिर पकड़ा गया और बाँध लिया गया।

तब राजकुमार से उसके दो साथियों ने कहा कि अब आप डाकू से कुछ न बोलिए क्योंकि इस वक्त़ डाकू का हाल वैसा ही है जैसा कि जंगल में मनमाना विचरने वाले मस्त हाथी का हाल मनुष्यों के हाथ में पड़ने से होता है।

यदि सामने आवें विघ्न अपार ।
तो भी करना काम को पार ॥
हैं वेही पुरुष महा महान ।
जो उत्तम कार्य का करते ध्यान ॥
कर्म वीर जो होते इस जहान् ।
उनका होता मान महान ॥

मतलब यह है कि इसी तरह वह दाई रोज़ अच्छी अच्छी और तरह तरह की कहानियाँ—ऐतिहासिक कथाएं—सुना कर सब अच्छे अच्छे गुण मुझ में ठूँस ठूँस कर भरने की कोशिश करती थी। उन सार-गर्भित कहानियों का असर भी मुझपर बहुत अच्छा पड़ा जो आगे मालूम होगा ।

श्री रामकृष्ण हरि

—:०:—

मेरी बाल्यावस्था का दूसरा भाग ।

जब मेरी अवस्था ग्यारह बारह वर्ष की थी तब मेरी साहित्य-शिक्षा शुरू की गई । लड़ाई झगड़े के हुनर सीखने में जैसा मेरा दिल लगता था वैसाही लिखने पढ़ने में भी मेरा दिल लगने लगा ।

उन दिनों में, राजकुमार और राजकुमारियों की शिक्षा के लिए चीन महा देश के एक प्रसिद्ध नगर में जो चीन समुद्र के तट पर बसा हुआ था, एक विद्यालय था । विद्यालय क्या था आज कल का सा एक महा-विश्व-विद्यालय ही समझिए ।

नगर के ठीक बीच में विद्यालय का भवन सगर्व खड़ा हुआ था । भवन कोई ग्यारह मंजिल का था । मुख्य भवन के चारों ओर अनेक सुन्दर सुन्दर भवन उप-भवन बने हुए थे और सुन्दर सुन्दर वाटिकाएं और उप-वाटिकाएं फूलों और फलों से लहलहा रही थीं उस विद्यालय में चीन और जापान के अनेक राजकुमार और राजकुमारियों को नाना प्रकार की उत्तम उत्तम उत्तम शिक्षाएं दी जाती थीं ।

जब मेरी अवस्था कोई चौदह वर्ष की थी तब मैं भी इसी विद्यालय में शिक्षा-प्राप्ति के लिए भेजा गया और मैं लिखने पढ़ने में दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करने लगा । विद्यालय भर में किसी न किसी विषय में मैं अवश्य अव्वल रहता था । इससे शिक्षक-गण मुझे अत्यन्त स्नेह की दृष्टि से देखते थे और मुझे होनहार समझते थे ।

मुझे विद्यालय में भरती होकर कोई तीन महीने बीते थे कि उत्तर चीन देश की एक रियासत की राजकुमारी उसी विद्यालय में

शिक्षा-प्राप्ति के लिए लाई गई। उस राजकुमारी का नाम शिओमा था और मेरा नाम निओशिओ। शिओमा जब पहले पहल विद्यालय में लाई गई थी तब वह कोई दस ग्यारह वर्ष की थी। और मैं? चौदह वर्ष का था।

यद्यपि शिओमा की अवस्था बहुत कम थी परन्तु उसकी रूपराशि, उसकी मनोहर मूर्ति विद्यालय के सारे शिक्षक-गणों, राजकुमारों और राजकुमारियों को मोहे लेती थी। राजकुमारों में मैं भी एक था। नवागत राजकुमारी की अकथनीय सुन्दरता देख कर मैं भी कुछ कम मोहित नहीं होता था। मतलब यह है कि जो कोई शिओमा को एक बार देख पाता वह उसकी सुन्दरता पर मुग्ध हो जाता और उसको स्नेह और श्रद्धा की दृष्टि से देखता था। वह शिओमा के रूप को कोशिश करने पर भी नहीं भूल सकता था।

शिओमा के पास बैठना, शिओमा से बातचीत करना, शिओमा के साथ बाग-बगीचों में टहलना और शिओमा के साथ बैठ कर पढ़ना लिखना विद्यालय के सभी विद्यार्थी चाहते थे। शिओमा रूप में जैसी अद्वितीय थी वैसी ही वह बातचीत में और रहनसहन में भी सुचतुर थी। शिओमा सब के साथ मृदुता और मंद हास्य के साथ भाषण करती थी। उसका हँसमुख आँख और आत्मा को आनन्द देने वाला था और उसकी मृदुवाणी हृदय को पिघला कर पानी पानी कर देने वाली थी। शिओमा का विद्यालय में आना मानो एक सुन्दर स्वर्गीय फूल का खिल आना हुआ, जिसकी सौरभता को लोग जितना ही अधिक देखते जाते थे उतना ही अधिक उसको देखने की इच्छा उनमें बढ़ती जाती थी।

शिओमा लिखने पढ़ने में भी ख़ूब ध्यान रखती थी। नई नई बातें सीखने का उसको बड़ा शौक़ था। ईश्वर की कृपा से शिओमा में सभी गुण सुगुण थे। सोना में सुगंध ही समझिए।

मेरे सुभाग्य से या दुर्भाग्य से शिश्रोमा को उसी भवन में जगह दी गई जहाँ मेरा डेरा था। उस भवन में तीन मंजिल थे। सबसे नीचे वाले में मैं रहता था और सबसे ऊपर वाले में शिश्रोमा। बीच का मजिल ख़ाली था।

शिश्रोमा के साथ कई नौकर थे। उसकी एक बुड्ढी दाई भी थी जिसका नाम लसेटा था। मेरे साथ भी कुछ आदमी थे।

मुझे और शिश्रोमा को विद्यालय में प्रवेश करके कोई चार साल बीत गए। इतने समय में विद्यालय ही के क्या शहर के भी सभी लोगों से शिश्रोमा का अच्छी तरह हेल मेल हो गया। परन्तु मेरे साथ उसका विशेष रूप से हेल मेल था। विद्यालय के शिक्षकों में से या राजकुमारों अथवा राजकुमारियों में से कोई न कोई हर घड़ी शिश्रोमा के साथ ज़रूर रहता था। मैं तो उसी घर में रहता ही था; मैं हमेशा शिश्रोमा के कमरे में जाकर पाठ याद किया करता था। शिश्रोमा भी मेरे साथ बैठ कर पढ़ने में और शब्दों आदि का अर्थ मेरे से पूछने में संकोच नहीं करती थी। मैं भी उसे पाठ याद करने में यथाशक्ति मदद देता था। शिश्रोमा एक दो दर्जे मेरे से नीचे पढ़ती थी और मैं ऊपर; या यों समझिए कि शिश्रोमा एफ० ए० में पढ़ती थी तो मैं एम० ए० में।

इस अवस्था तक तो मेरे दिल में कोई नई बात पैदा नहीं हुई थी और मैं समझता हूँ कि शिश्रोमा के दिल में भी कोई बात नहीं थी। केवल निःस्वार्थ स्नेह परस्पर अवश्य था। यों तो विद्यालय के सभी लोग, हर विषय में मेरी दक्षता, बुद्धिमत्ता, चतुरता और मेरी चटकदार बातों के कारण, मुझे स्नेह की दृष्टि से देखते ही थे; परन्तु शिश्रोमा मुझे विशेष स्नेह और पवित्र हृदय से चाहती थी। इससे विद्यालय के सभी लोग मुझे धन्य और भाग्यवान समझते थे।

एक तो जापान में मेरा एक नामी घराना था और चीन में शिओमा का घराना भी कुछ ऐसा वैसा नहीं था; फिर शिओमा और मुझ में परस्पर एक अपूर्व स्नेह देख विद्यालय के कोई कोई लोग सुन गुन करते थे कि ईश्वर चाहेगा तो यह अच्छी जोड़ी बनेगी। मगर हम दोनों के हृदयों में वैसी कोई बात तब तक उदय नहीं हुई थी। अगर हम दोनों में कोई बात थी तो केवल निःस्वार्थ स्नेह।

शिओमा की अवस्था सोलह वर्ष की हो चुकी थी और मेरी बीस की। क्षण क्षण में बदलने वाले इस संसार चक्र में कब क्या होगा सो किसी को मालूम नहीं रहता। एक दिन रात को मुझे बुख़ार आया। बुख़ार ज़रा ज़ोर का था। मैं रोज़ पाँच बजे सवेरे शिओमा के कमरे में जाकर अपना पाठ याद करना शुरू कर देता था। शिओमा भी वहीं आ कर अपना पाठ याद किया करती थी। उस दिन बुख़ार के कारण मैं पाठ याद करने के लिए उस कमरे में नहीं जा सका। उस दिन मुझे कमरे में न पाकर शिओमा मेरी खोज में झट नीचे उतर आई। मेरे किसी नौकर ने शिओमा से कह दिया कि मैं रात से बुख़ार में पड़ा हूँ। शिओमा मेरे बुख़ार का हाल सुनते ही झटपट मेरे सोने के कमरे में चली आई और मेरे पलंग के पास बैठ गई। शिओमा कब आकर मेरे पलंग के पास बैठ गई थी सो मुझे मालूम नहीं था।

कोई दो पहर दिन को मेरा बुख़ार ज़रा उतरा। जब मैंने अपने मुँह पर से कपड़ा हटा कर देखा तो मेरे आश्चर्य का पारावार नहीं रहा। मैंने सोचा कि शायद मैं बुख़ार की हालत में स्वप्न देख रहा हूँ। आधा उठ कर अपनी आँखें अच्छी तरह मल कर मैंने फिर देखा तो बिलकुल एक नई बात मुझे नज़र आई!

अच्छी तरह देखने पर मालूम हुआ कि बात स्वप्न की नहीं थी।

शिश्रोमा स्वयं मेरे पलंग के पास बैठ कर सिसक सिसक कर रो रही थी और उसके सामने पाव भर आँसुओं का एक कुन्ड सा बन गया था। अश्रुधारा जारी थी। शिश्रोमा की हालत देख मेरा दिल एकदम पिघल गया। मैं एकाएक उठ बैठा और—

मैंने कहा—शिश्रोमा ! क्यों रोती हो, क्या तकलीफ़ है, क्या तुम्हारे पिता के यहाँ से कोई ख़बर आई है ?

शिश्रोमा—(रोती हुई) तु · म को · बुखार·· आ · या, इस · लिए · मे · रे दि · ल · में · रं · ज हुआ !

शिश्रोमा का जवाब सुन कर मैं सहम गया। परन्तु उसी वक्त मेरे ध्यान में आया कि पवित्र स्नेह ऐसा ही होता है।

पवित्र हृदय वाली सरला शिश्रोमा ने इस के पहले कभी मुझे बुख़ार से पीड़ित नहीं देखा था ; मैं हमेशा शिश्रोमा के साथ पढ़ने लिखने में, चहल पहल में और चटकदार बातों ही में समय बिताता था। अचानक मुझे बुख़ार से पीड़ित देख शिश्रोमा का पवित्र सरल हृदय उमड़ आया। इसी से उसने मेरे लिए अमृत के समान आँसू टपकाए।

यद्यपि इस अवस्था तक मेरे दिल में कोई नई बात पैदा नहीं हुई थी परन्तु जितना ही जितना मैं उस वक्त शिश्रोमा के चेहरे को देखता जाता था उतना ही उतना मेरे दिल में एक अद्भुत डांवांडोल पैदा होता जाता था। फिर मैंने शिश्रोमा से पूछना शुरू किया:—

मैं—शिश्रोमा ! तुम आज नहाई क्यों नहीं, अब तक खाई क्यों नहीं ?

शिश्रोमा—तुम्हारा बुख़ार जब उतर जायगा तब मैं नहाऊँगी खाऊँगी।

मैं—शिश्रोमा ! तुम ऐसी बातें क्यों करती हो ?

.श्रोमा—चुप।

मैं—चुप क्यों हो शिश्रोमा ! बता तुम्हारे दिल में क्या है ? तुम्हारा मुख देख कर तो मुझे बड़ा अचरज होता है।

शिश्रोमा—चुप ।

मैं—देख शिश्रोमा ! यदि तुम्हारे पवित्र हृदय में ऐसी कोई बात हो जो कभी कभी मेरे भी दिल में झलक जाती है तो समझ लो कि यह तेरा मेरा सुखमय स्नेह दुखमय हो जावेगा। क्योंकि तुम चीनी, मैं जापानी।

इतना सुन कर शिश्रोमा रंज से भरी हुई एक तिर्छी नज़र से मेरी ओर देख कर चुप रह गई ।

मैं—और मैंने सुना है कि तुम्हारा पिता महा गर्विला है। वह जापानियों को घृणा की दृष्टि से देखता है। तुम्हारे पिता का जापानियों को नहीं चाहना स्वाभाविक भी है। क्योंकि चीन और जापान के बीच में पूर्व काल ही से शत्रुता चली आती है ।

मेरा इतना कहना सुनते ही शिश्रोमा के सारे वदन-मंडल से पसीना छूटने लगा और उसकी आँखों से अश्रुधारा ज़ोर पकड़ने लगी। मैं समझ गया कि मैंने जो कुछ कहा वह शिश्रोमा के हृदय में लग कर बाण का काम कर गया ।

मेरा भी मन ठिकाने न रहा। मैंने शिश्रोमा का हाथ पकड़ कर उसे शान्त किया और फिर:—

मैंने कहा—शिश्रोमा ! मेरा बुख़ार अब उतर गया, तुम अब जा कर नहालो और कुछ खा लो ।

शिश्रोमा—तुमको बुख़ार आया है इसलिए आज तुम भी हमारे यहाँ खालो। हमारी बुढ़िया रसोई अच्छी बनाती है; तुम्हारे नौकर अच्छी रसोई बनाना नहीं जानते ।

मैं—अच्छी बात है ।

हम दोनों ऊपर गए। नहा धो कर दोनों ने भोजन किया। स्नेहवश मैं अकसर शिश्रोमा के यहाँ भोजन करता था और शिश्रोमा भी कभी कभी मेरे यहाँ भोजन करने आती थी। कभी कभी तो शिश्रोमा ख़ुद

मेरे लिए रसोई तैयार करके खाने के लिए मुझे बड़े स्नेह से बुला ले जाती थी।

मेरे बुख़ार की घटना के बाद से हम दोनों के हृदयों में भीतर ही भीतर एक अपूर्व आनन्दमय प्रकाश गुप्त रूप से प्रकाशित होने लगा।

× × × × × × ×

—:o:—

मेरी युवा-अवस्था का प्रथम चरण।

—०—

विद्यालय में शिक्षा चीनी और जापानी भाषा में दी जाती थी। संस्कृत भी पढ़ाई जाती थी। इनके सिवाय अनेक उपयोगी और उत्तम उत्तम बातें सिखाई जाती थीं।

मुझे शिल्प और यंत्र-निर्माण विद्या में बहुत शौक़ था। फ़ुर्सत के वक़्त मैं अक्सर अनेक और अनोखे यंत्र तैयार किया करता था जिन को देख कर लोग बड़े अचरज में आजाते थे और मेरी तारीफ़ दिल से किया करते थे।

उन दिनों में बड़े बड़े जहाज़ नहीं बनाए जाते थे। लोग छोटी छोटी नावों में बैठकर समुद्र में इधर उधर घूमा करते थे। विद्यालय के विद्यार्थी और शिक्षक भी समुद्री हवा खाने के लिए जाया करते थे। शिओमा और मैं तो अक्सर जाया करते थे। परन्तु शिओमा जैसी कोमलांगी को अपने साथ ले वैसी छोटी सी नाव में बैठकर समुद्र की हवा खोरी करना बहुत भयानक बात थी; क्योंकि कई बार नावों के उलट जाने से या डूब जाने से कई आदमी अपनी जानों से हाथ धो चुके थे।

ऐसी ऐसी घटनाएं देखकर मैंने एक ऐसा नाव–जहाज़ बनाने का विचार किया जिसके उलटने या डूबने का बिलकुल डर ही न रहे और जो चट्टानों के टक्करों से, हवा के झोकों से और समुद्र की लहरों से ज़रा भी न डगमगावे।

मेरे विचारों के अनुसार मैं एक जहाज़ का नक़्शा तैयार करने में

लगा। छुट्टी के वक्त जब मैं जहाज़ का नक़शा तैयार करने के लिए अपने कमरे में बैठ जाता था तब शिओमा को चैन नहीं पड़ती थी। वह आकर मेरे पीछे खड़ी हो जाती थी और मेरे कंधे पर अपना कोमल हाथ रखकर चुपचाप मेरा काम देखती जाती थी। मुहब्बत से लबालब भरा हुआ नाज़ुक दिल वाली शिओमा की ऐसी कार्रवाइयाँ मुझे कुछ अखरती भी नहीं थीं। मैं भी चुपचाप अपना काम करता जाता था।

थोड़े ही दिनों में मैंने जहाज़ का नक़शा अपने मन के माफ़िक अच्छी तरह तैयार कर लिया। नक़शा तैयार होने पर मैंने उसे अपने शिल्प-शास्त्र के अध्यापक-प्रोफ़ेसर को दिखलाया। जहाज़ का नक़शा देखकर प्रोफ़ेसर महाशय बहुत ख़ुश हुए—ख़ुश क्या हुए—नक़शे को देखकर वे दंग हो गए।

नक़शा देख कर प्रोफ़ेसर महाशय ने मुझसे कहा कि क्या आप इसी नक़शे के अनुसार नाव तैयार करना चाहते हैं। मैंने कहा "हां गुरु जी, मैं आपकी कृपा से ऐसाही जहाज़ तैयार करूँगा और पाँच सात महीने के अन्दर ही तैयार करके दिखाऊंगा। आप कृपा करके केवल इतनाही बतलाइए कि इस नक़शे के अनुसार जहाज़ के तैयार करने में कितना ख़र्चा लगेगा।"

प्रोफ़ेसर ने एक एस्टिमेट तैयार करके मुझे दिया। एस्टिमेट में उन्होंने कोई साठ लाख रुपए का ख़र्चा बतलाया। मैंने अपने घर जापान से साठ लाख रुपया झट मँगालिया। जापान और चीन के अच्छे अच्छे और नामी नामी कोई दो हज़ार कारीगरों को बुलवा कर जहाज़ तैयार करने में मैंने लगाए। मैं जैसा जैसा बताता जाता था वैसा वैसा कारीगर लोग जहाज़ तैयार करते जाते थे। काम धड़ाके से चला। जहाज़ बहुत जल्द तैयार हो गया और चीन समुद्र की छाती पर सगर्व खड़ा हो गया। जहाज़ तिमंज़ला बनाया गया था। एक एक

मंजिल में कई कमरे थे जो ऐश वो आराम की चीज़ों से ख़ूब सजाए गए थे। वह जहाज़ क्या था ख़ासा एक राजमहल था। जहाज़ के यंत्र में फ़ी घंटा पचास मील चलने की ताक़त रखी गई थी। जहाज़ का नाम मैंने "शिओमा" रखा।

सबसे पहले जहाज़ को खोलने के लिए एक तारीख़ नियत की गई। विद्यालय के प्रधान अध्यापक ने इसका इश्तहार चीन जापान और दूर दूर के देशों में भेज दिया। अनेक मानी-ज्ञानी राजे-रईस जहाज़ को देखने के लिए आने लगे। विद्यालय की ओर से सब मेहमानों के लिए बहुत अच्छा इंतजाम किया गया था।

शिओमा के देश से उसके माता-पिता भी आए थे। वे उसी महल में ठहराए गए थे जहाँ शिओमा और मैं रहते थे।

जहाज़ को खोलने की तारीख़ आगई। उस दिन बड़े समारोह के साथ, दूर दूर से आए हुए बड़े बड़े महात्माओं को जहाज़ ही पर, एक बड़ा भारी भोज दिया गया दो बजे दिन को जहाज़ का लंगर उठाया गया। विद्यालय के कुल शिक्षक और विद्यार्थियों के साथ कोई डेढ़ हज़ार आदमी जहाज़ पर सवार हो गए। शिओमा और उसके माता-पिता को मैंने बड़े आदर के साथ एक अच्छे सजे हुए कमरे में बैठा दिया।

जहाज़ चलाने के लिये मैं ख़ुद एंजिन के कमरे में जा बैठा। जहाज़ का लंगर खोल दिया गया। जहाज़ चलने लगा। उस वक़्त जापान और चीन सरकार के हुक्म से कई तोपों की सलामी दागी गई।

जो जहाज़ पर बैठे हुए थे उनके आनन्द का अनुभव तो वे स्वयं ही कर रहे थे और जो तट पर खड़े खड़े तमाशा देख रहे थे वे भी अत्यन्त आनन्द के मारे हर्ष-ध्वनि से आकाश पाताल एक कर रहे थे।

बराबर चार घंटे तक मैं जहाज़ को चलाता रहा। इस बीच में

शिओमा अपनी मा से आज्ञा लेकर मेरे कमरे में चली आई और मेरे पास बैठ कर जहाज़ चलाने के ढंग देखने लगी। मैं भी उसे जहाज़ चलाने की बहुत सी बातें बताता जाता था। शाम के वक्त जहाज़ को मैं तट पर लौटा लाया।

इसके बाद दूर दूर से आए हुए दर्शक और मेहमान अपने अपने देश को चले गए।

मेरे जहाज़ को देख कर चीन सरकार ने पांच वैसे ही जहाज़ बना देने के लिए मुझे हुक्म दिया था; मगर मैंने साफ़ इन्कार कर दिया। क्योंकि मैं अपने प्रिय देश जापान की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझता था। मैंने कई अच्छे अच्छे जहाज़ तैयार करके अपने देश की सेवा के लिए जापान सरकार के हवाले किए। इस संसार में प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि अपने से जितना कुछ हो सके अपने देश की सेवा करे। मेरा जहाज़ी कारख़ाना बहुत दिनों तक जारी था। "शिओमा एन्ड निओशिओ" कम्पनी के नाम से वह प्रसिद्ध था। अब वह है या नहीं सो मालूम नहीं।

....

ज्यों ज्यों समय बीतने लगा त्यों त्यों शिओमा की चंचलता बढ़ने लगी। जब कभी मैं अकेला बाहर जाता था तब मेरे लौटने तक उसको चैन नहीं पड़ती थी। उस वक्त हम दोनों की अवस्था ऐसी नहीं थी कि जो हम यह न समझ सकते रहे हों कि वैसे अगाध प्रेम का फल क्या होता और लोग देख सुन कर क्या कहते।

कभी कभी विद्यालय के कोई कोई लोग चक्करदार ढंग से बहुत कुछ बातें कह भी दिया करते थे। उनकी बातें मुझ पर कोई असर करती थीं या नहीं सो तो मुझे याद नहीं, परन्तु मालूम होता है कि शिओमा ज़रूर उन बातों पर ध्यान देती थी।

जब शिश्रोमा के माता-पिता विद्यालयवाले मेरे मकान में ठहरे हुए थे, तब एक दिन मैं शिश्रोमा को संस्कृत पाठ याद करा रहा था। उस वक़्त शिश्रोमा की दाई-बुड्ढी लसेटा और उसके मा-बाप भी वहीं बैठे हुए थे।

मुस्कुराते हुए शिश्रोमा का पिता मेरे से पूछने लगा:—

शि० का पिता—क्योंजी निश्रोशिश्रो ! तुम्हें शिश्रोमा को पढ़ाने में आनन्द आता है क्या ?

मैं—जी हाँ। शिश्रोमा भी तो मेरे साथ बैठ कर पढ़ना पसन्द करती है और इसको लिखने पढ़ने का ख़ूब शौक़ है।

शि० की मा—क्यों शिश्रोमा ! तुमको पाठ याद करने में निश्रोशिश्रो सहायता देते हैं न ?

शिश्रोमा—(सरलता से) हाँ, मा; ये जो कोई बात मुझे एक बार समझा देते हैं तो वह मुझे झट याद हो जाती है।

बुड्ढी लसेटा—संस्कृत का बहुत कुछ अभ्यास तो राजकुमार ने ही शिश्रोमा को कराया है। क्यों है न शिश्रोमा ?

शिश्रोमा—(सरलता से) हाँ।

शि० का पिता—क्यों जी निश्रोशिश्रो ! आप की शादी की कुछ तजवीज़ हुई या नहीं ?

मैं—जी, अभी तक तो कुछ नहीं हुई।

लसेटा—(मुस्कुराती हुई) अपनी शिश्रोमा का विवाह भी किसी अच्छे राजकुमार के साथ जल्दी कर देना चाहिए।

ये बातें सुनते ही शिश्रोमा के चेहरे का रंग कुछ बदल गया। उसका दिल ज़रा धड़कने लगा। अपनी पुस्तक की ओर देखने के बहाने से वह बड़ी चंचलता से छिप छिप कर अपनी दृष्टि सब के ऊपर फेंकने लगी। छिपी छिपी वह सब के मुखों को देखने लगी।

शिओमा के माता-पिता और दाई लसेटा ने क्यों ऐसी बातें निकालीं, उनका क्या मतलब था; इस पर मैंने ध्यान नहीं दिया।

कमल के पत्ते के ऊपर से जिस प्रकार पानी के बूँद खिसक जाते हैं ठीक उसी तरह उनकी बातें भी मेरे दिल से निकल गईं। परन्तु मुझे ऐसा मालूम होता था कि उस वक्त शिओमा के पवित्र हृदय-मंदिर में किसी देव की पूजा हो रही थी।

× × × × × ×

एक दिन शिओमा के पास उसके देश से एक पत्र आया। पत्र शिओमा की एक सखी ने भेजा था। पत्र पाने के बाद से शिओमा का रंग ढंग एक तरह से बिलकुल बदल गया। वह मेरे से कुछ सकुचाने लगी; परन्तु स्नेह के साथ, तब से शिओमा का मुख-मंडल दिन प्रति दिन चंचलता की चमक में डूबा हुआ गंभीर और तेजोमय होने लगा। वह अत्यन्त आनन्द से रहने लगी। पढ़ने के लिए मैंने कई बार वह पत्र शिओमा से मांगा परन्तु उसने पत्र मुझे नहीं दिया। शिओमा दिन भर में कई बार उस पत्र को पढ़ती थी और ख़ुश होती थी पर मैं हैरान था।

थोड़े दिन में मेरे पास भी एक पत्र जापान से आया। वह पत्र मेरे एक मित्र ने भेजा था। पत्र का मर्म इस प्रकार था:—

"मेरे प्यारे राजकुमार निओशिओ;

आप के शिक्षकों ने जितने पत्र आपके कुटुम्बियों के पास भेजे हैं उनसे मालूम हुआ कि आपने अपने सद्‌गुणों और सद्व्यवहारों से अपने शिक्षकों के मन हरण कर लिए और आपने अपने अनुकूल सुशीला राजकुमारी शिओमा का भी मन हरण किया है। आप का

विवाह राजकुमारी के साथ चार पाँच महीने में होनेवाला है। इसके लिए मैं आप को बधाई देता हूँ।

आप का

सी० रा०।"

पत्र मैंने एक बार नहीं दो बार नहीं, १०—२०—४०—५० बार पढ़ा और मालूम नहीं कितने बार पढ़ा। जितने ही बार पढ़ा मतलब एक ही निकलता गया !!

पत्र पढ़ कर मैं अपने आप को भूल गया। उस वक्त का मेरा हाल, लिखने के लिए, किसी प्रकार शब्दों में लाया ही नहीं जा सकता। मतलब यह है कि उस वक्त मेरा मन मेरे कबज़े में नहीं था; वह क्या जाने कहाँ कहाँ भटकने लग गया था।

कई बार उस पत्र को पढ़ कर मैंने उसे मेज़ पर रख दिया और कमरे के बाहर आकर टहलने लगा। जब मैं पत्र पढ़ रहा था तब शिश्रोमा मुझे आड़ से देख रही थी। मैं ज्योंही कमरे से बाहर नि— त्योंही उसने अपना पत्र लाकर मेरे मेज़ पर रख दिया और मेरी को उठा ले गई। थोड़ी देर में मैं कमरे में आकर फिर पत्र पढ़ने ल देखा तो शिश्रोमा के नाम का पत्र था। और वह चीनी भाषा में शिश्रोमा के पत्र का मतलब इस प्रकार था:—

"मेरी प्यारी राजकुमारी शिश्रोमा;

आप के विद्यालय के सब शिक्षक और आप के सब कुटुम्बीजन राजकुमार निश्रोशिश्रो के उत्तम गुणों पर मोहित हो गये हैं। उन्होंने सब सोच समझ कर निश्चय किया है कि आप का विवाह राजकुमार निश्रोशिश्रो के साथ किया जाय। यह बात चीन और जापान के बड़े बड़े लोगों को भी पसंद आई है, मुझे पूर्ण आशा है कि राजकुमार निश्रोशिश्रो की सुदृढ़, गंभीर और विशाल मूर्ति को आप अपने पवित्र

हृदय-मंदिर में अब तक स्थापित कर चुकी होंगी। आप का विवाह चार पाँच महीने में होगा। ईश्वर आप को सदा सोहागिन बना रखे। विवाह के बाद मुझे भूल मत जाइयो।

आपकी

र. ल.''

उस दिन चिट्ठियों को अदलबदल करके शिग्रोमा फिर मेरे पास नहीं आई। वह शर्मा गई। मैं भी उस दिन दियाबत्ती के पहले ही बिना खाए ही और बेवक्त अपने पलँग पर कपड़ा ओढ़ कर लेट गया। बहुत कुछ कोशिश करने पर भी नींद नहीं आई। नींद आवे भी तो कहाँ से आवे? एक तो बेवक्त, दूसरे दिल में कुछ और ही गड़बड़।

शिग्रोमा का भी उस दिन अजब हाल था। कभी वह पलँग पर लेट जाती, कभी इधर उधर टहलती, कभी दाई से कुछ बात करती, कभी मेरे लिए भोजन बनाने की तजवीज़ करती और कभी वह मेरे बाबत नौकरों से पूछताछ करती थी। मतलब यह है कि उसका मन ठिकाने नहीं था। मेरी भी हालत वैसी ही थी। उस दिन मेरे खाने के लिए कुछ ख़ास चीज़ें ख़ुद शिग्रोमा ने बड़े प्रेम से तैयार कीं। तैयार करने को तो उसने खाना तैयार किया; परन्तु खाने के लिए मुझे बुलावे किस तरह? क्योंकि संकोच और शर्म से वह दबी जा रही थी। मुझे बुलाने के लिए आख़िर उसने लसेटा को हुक्म दिया। लसेटा बुड्ढी होने पर भी बड़ी लटकदार बातें करती थी। शिग्रोमा के हुक्म से लसेटा मेरे पास आई और बिना मेरे से कुछ कहे वापस जाकर शिग्रोमा से बतलाई कि वे तो उठते नहीं, तुम्हीं चलो। लाचार हो शिग्रोमा लसेटा के साथ मेरे कमरे में आई और दरवाज़े के पास खड़ी हो गई, तब बुड्ढी लसेटा मुझे पुकार कर कहने लगी कि उठिए उठिए शिग्रोमा आई है। उठ कर मैंने जो देखा तो

शिश्रोमा अत्यन्त स्नेह से मेरी ओर टकटकी लगा रही है ! उसके गंभीर नयनों में प्रेमाश्रु डबढबा रहे हैं !! उसका सारा शरीर एक स्वर्गीय आनन्द की लहरों से पुलकायमान हो रहा है !!!

शिश्रोमा की दिल की बातें मेरे दिल में आकर टकराने लगीं। एक प्रकार से उसका कोमल हृदय आकर मेरे हृदय में मिल गया। मैं झटपट उठ खड़ा हुआ और संकोच छोड़ शिश्रोमा के कोमल हाथ को अपने हाथ में लेकर मैंने शिश्रोमा से कहा "शिश्रोमा" ! चलो, मैं तुम्हारे यहाँ भोजन करने के लिए तैयार हूँ !"

शिश्रोमा और लसेटा के साथ मैं ऊपर के मंज़िल पर गया। खाने की सब चीज़ें पहले ही से परोस कर रखी गई थीं। मैं खाने के लिए बैठ गया। मगर जिस चीज़ को मैं चख के देखता था उसका स्वाद मुझे अजब ही प्रकार का मालूम होता था। सब चीज़ों में से थोड़ी थोड़ी चख कर मैं एकदम कहकहा मार कर हँसता हुआ उठा और शिश्रोमा के पढ़ने के कमरे में जाकर बैठ गया। शिश्रोमा और बुड्ढी लसेटा को बड़ा अचरज हुआ। लसेटा ने झट उन सब चीज़ों को चख कर देखा। वहाँ क्या था ? उन सभी चीज़ों में नमक नदारद।

शिश्रोमा बिचारी सूख गई। लसेटा अपनी लटकदार बातों से और भी उस बिचारी को रिझाने लगी !! शिश्रोमा राजकुमारी होने पर भी पाक-शास्त्र में बहुत निपुण थी; परन्तु जब मनही परवश हो गया तब वह क्या करती।

यह सत्य है कि अत्यन्त सुख या अत्यन्त दुख के समय मनुष्य का मन विचलित हो जाता है और वह एक ठिकाने नहीं रहता।

चिट्ठियों के अदल बदल होने के दिन से शिश्रोमा और मैं दो तन एक मन हो गए। उस वक्त की एक बड़ी अचरज की बात जो मुझे अब तक याद है यह थी कि उस दिन से शिश्रोमा की सुन्दरता

दिन प्रति दिन अधिकाधिक खिलने लगी, उसका मनोहर मुख-मंडल तो सवेरे से शाम तक और शाम से सवेरे तक कुछ का कुछ हीं हो जाता था, उसका सुडौल शरीर स्वर्गीय सुन्दरता से ढकता जाता था, उसके शरीर का एक एक भाग एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर अपनी सुन्दरता और मनोहरता प्रकट करता जाता था, उसका विलोकनीय वदन-मंडल एक अद्वितीय अतुलनीय और स्वर्गीय रूप धारण करता जाता था। इस पृथिवी के जीवों के साथ ईश्वर जो इस प्रकार के व्योपार यथासमय करता रहता है इससे उसको (ईश्वर को) कुछ प्राप्त होता है या नहीं सो वही जाने।

... ...

"थोड़े ही दिनों में हमारा विवाह होगा" यह जान कर शिओमा और मेरे अगाध आनन्द का पारावार नहीं रहा। परन्तु एक बात से हमारे मन में चिंता और चंचलता उत्पन्न हो जाती थी। वह बात यह थी कि शादी के लिए अभी कुछ महीने बाक़ी थे। समय का विचार ध्यान में आते ही एक एक पल एक एक साल के समान हम दोनों को मालूम होता था।

परन्तु समय किसी के दुख सुख के लिए रुकने का नहीं; वह सदा अपना रास्ता लिये ही रहता है।

शादी के लिए सिर्फ़ दो महीने बाक़ी रहे। हमारी शिक्षा की समाप्ति भी हुई। विद्यालय-भर में मैं प्रथम आया। राजकुमारियों में शिओमा का नम्बर दूसरा आया। शिओमा भी प्रथम आती परन्तु परीक्षा के पाँच सात महीनों से वह कुछ और ही विषय में निमग्न हो गई थी।

विद्यालय के राजकुमार और राजकुमारियों को एक आदर्श उदाहरण दिखाने के लिए विद्यालय के शिक्षकों ने हमारा विवाह विद्यालय

हो के एक भवन में कर देने का निश्चय किया। उसी मुताबिक मेरे और शिओमा के कुटुम्ब के लोग आ आ कर सब तैयारियाँ वहाँ करने लगे।

उस समय शिओमा और मेरे आनन्द की सीमा न रही। खाते पीते, चलते फिरते, उठते बैठते, सोते जागते हम दोनों को आनन्द ही आनन्द दिखाई देता था।

शादी की सब तैयारियाँ हो चुकीं। जापान से मेरे कुटुम्बी और उत्तर चीन देश से शिओमा के कुटुम्बी बड़ी ख़ुशी से साज बाज के साथ आ गए। जापान और चीन देश से बड़े बड़े रईस मेहमान होकर आए। मेरे और शिओमा के कुटुम्बियों के आनन्द का कुछ ठिकाना न था। मेरे और शिओमा के आनन्द के विषय में यहाँ कुछ लिखने की कोशिश करना तो मानो सारी पृथ्वी को एक उँगली से उठाने की कोशिश करना है। हमें दोनों का आनन्द उस वक़्त अपार था।

सारे शहर के सज्जन स्त्री-पुरुष और दूर दूर से आए हुए मेहमान विवाह-मंडप के नीचे बैठ गए। शादी की पहिली रसूम शुरू होने लगी। उसी वक़्त—उसी अवसर पर—उसी ऐन मौक़े पर जापान देश का एक बुड्ढा रईस और उसका एक बुड्ढा मुनीम विवाह-मंडप के नीचे आए और उन्होंने एक बहुत पुराना काग़ज़ विवाह-मंडप के नीचे बैठे हुए सज्जनों के सामने रख दिया। उस काग़ज़ को पढ़ कर सब सज्जन सन्न हो गए! सब का ख़ून सूख गया!! सबके मुँह बंद हो गए! उस बुड्ढे रईस का बुड्ढा मुनीम खड़ा होकर कहने लगा:—

"साहेबान! देखिए, इस काग़ज़ में जो शर्तें हैं उन्हीं के मुताबिक़ राजकुमारी शिओमा की शादी होनी चाहिए। मुझे उम्मेद है कि आप सब साहेबान और चीन वो जापान के हाकिमान भी अपनी अपनी राय इन शर्तों के मुताबिक़ ही देवेंगे। अगर शिओमा का बाप या मेरा

मालिक—बुड्ढा रईस इन शर्तों के खिलाफ़ शिश्रोमा की शादी होने देवेंगे तो दोनों की .ख़ैर नहीं।"

उस पुराने काग़ज़ को देख कर और बुड्ढे मुनीम की बातें सुन कर मंडप में बैठे हुए सभी सज्जन बहुत सख़्त नाराज़ हुए। उनमें से कुछ कहने लगे:—

"यह बहुत पुराना काग़ज़ है, इसे फाड़ के फेंक दो, इसे जला कर ख़ाक कर दो और इन दोनों बुड्ढों को यहाँ से निकाल बाहर कर दो।"

बड़े झमेले के साथ .खूब वाद विवाद होने के बाद चीन और जापान के हाकिमों ने और सब सज्जनों ने बड़ी लाचारी और अफ़सोस के साथ यही राय दी कि शर्तों के मुताबिक ही शिश्रोमा की शादी होना वाजिब है। फिर क्या था? शादी का होना बंद कर दिया गया। सारी .खुशी महाघन घोर अंधेरे में जा फँसी। शादी की सारी सामग्रियाँ जहाँ की तहाँ बिखरी पड़ी रह गई और ऐसा मालूम होने लगा कि मानों बारह बजे दिन ही को सूरज एकाएक गायब हो गया हो और घोर अंधेरी रात छा गई हो!!! यह जान कर कि अब शिश्रोमा की शादी मेरे साथ न होगी, हम दोनों के कुटुम्बी बिलख बिलख कर रोने लगे। हम दोनों के हृदयों पर तो ऐसा धक्का लगा कि हम दोनों के दोनों बेहोश होकर प्राणहीनों के समान ज़मीन पर गिर पड़े। किसी का सुध किसी को नहीं रहा।

× × × × × × × × × ×

उस पुराने काग़ज़ में क्या शर्तें थीं सो लिखने की हिम्मत नहीं होती। .खुद हिम्मत ही किसी प्रकार हिम्मत करके लिखने जाती है तो क़लम हाथ से गिरी पड़ती है, हाथ काँपने लगता है, दिल धड़कने लगता है और उधर दवात की स्याही दवात ही में सूखी जाती है। हा!

पाठक ! इसी से उस पुराने काग़ज़ का मतलब लिखने में इतनी देरी हुई । क्षमा कीजिए । अब .खुद हिम्मत ही हिम्मत बाँध कर उस पुराने काग़ज़ में लिखी शर्तों का कुछ मतलब बताए देती हूँ सो सुनिए:—

जापान के उस बुड्ढे रईस के और राजकुमारी शिओमा के पिता के कोई तीन चार पीढ़ी पहिले यह शर्त होकर लिखा पढ़ी हुई थी कि दोनों कुटुम्बों में एक के यहाँ लड़की पैदा हो और दूसरे के यहाँ लड़का हो तो पहला दूसरे ही के लड़के को अपनी लड़की ब्याह देवे और दूसरा अपने लड़के के लिए पहले वाले की ही लड़की को लावे। जैसे एक के यहाँ राजकुमारी शिओमा पैदा हुई, दूसरे (बुड्ढा रईस) के यहाँ लड़का हुआ तो दोनों की शादी शर्त के मुताबिक होना ही चाहिए; अगर दो में से एक या दोनों उस शर्त को मानने से इन्कार करें तो उसकी या उन दोनों की रियासतें सरकार छीन लें और उनको सकुटुम्ब देश निकाले की सज़ा देवे ।

× × × × × × × ×

जापान के बुड्ढे रईस का एक लड़का था। उसकी उमर कोई तीस वर्ष की हो चुकी थी। मगर उसके अवगुणों के सबब से कोई अपनी लड़की उसे देना पसन्द नहीं करते थे । इसलिए उसके बुड्ढे मुनीम ने उस पुराने काग़ज़ को वक्त पर काम में लाया और मेरे और शिओमा के सुख को कुचल कर मिट्टी में मिला दिया ।

बुड्ढे रईस और उसके बुड्ढे मुनीम का ईश्वर भला करे.. ...... बुड्ढा रईस शिओमा को अपने लड़के के लिए पाने की उम्मेद से इतना .खुश हुआ कि वह अपने मुनीम को लेकर नाचने लगा । नाचते नाचते दोनों के दोनों जो पर्श के नीचे धड़ाम से गिरे कि बुड्ढे मुनीम का एक पैर टूट गया और बुड्ढे रईस के जो सिर्फ़ दो ही दाँत सामने के थे वे झड़ गए । चलो अच्छा हुआ ।

मेरी युवा-अवस्था का द्वितीय चरण ।

मेरा और शिओमा का विवाह होते होते एकाएक रुक जाने से और हम दोनों का सम्बन्ध—हम दोनों का अगाध प्रेम—एकबारगी टूट जाने से दुःख और शोक के मारे हम दोनों कई दिन तक बीमार रहे। विचारी शिओमा तो मरती मरती बची ।

एक दिन शिओमा की बुड्ढी दाई लसेटा मेरे पास आई और मुझे समझा बुझा कर वह यों कहने लगी "बेटा निओशिओ! देखो, तुम्हारे लिए दुखी हो कर शिओमा प्राण त्यागना चाहती है। तुम मर्द हो—तुम राजकुमार हो—तुम अपनी क़िसमत इस दुनियाँ के मैदान में एक वार नहीं हज़ार वार लड़ा सकते हो और तुम को शिओमा के समान एक नहीं कई राजकुमारियाँ मिल सकती हैं, चलो उठो, शिओमा को तसल्ली दो जिसमें उसका प्राण तो बचे। और तुम मेरा कहा मानो; अब तुम अपने दिल से शिओमा को हटा दो।

बुढ़िया का अन्तिम वाक्य मेरे हृदय में तेज़ बर्छी के समान चुभ गया। मैं अपने मन में कहने लगा "शिओमा को मैं किस प्रकार भूल सकूँगा—उसे अपने हृदय से किस तरह हटा सकूँगा।" लसेटा बहुत कुछ समझा बुझा कर मुझे शिओमा के पास लेगई। शिओमा की अवस्था शोचनीय हो रही थी। उसका गंभीर मुख-मंडल मुर्झा कर पीला पड़ गया था, उसकी हालत देख कर मेरा दिल—मेरा हृदय—हा...

मेरा रुदन सुन कर शिओमा ने अपनी आँखें खोलीं। मुझे देखते ही शिओमा के शरीर में बिजली की सी ताक़त आई। वह झट उठ कर

मेरी ओर लपकी। बीच में बुढ़िया ने उसे सम्हाला नहीं तो वह गिर पड़ी होती।

हम दोनों को अलगाने के लिए छोटे बड़े सभी आदमी आ आकर समझाने लगे। बुढ़िया तो रात दिन समझाती थी। मगर वहाँ तो "मर्ज़ बढ़ता ही गया ज्यों ज्यों दवा की" की हालत थी।

मुझे अभी तक अच्छी तरह याद है कि हम दोनों को समझाने के लिए जो कोई आता था वह हमारी हालत देख कर बिना चार आँसू बहाए एक शब्द भी नहीं बोल सकता था।

खैर; किसी प्रकार अपने दिल को कड़ा करके मैंने अपने को सम्हाला और शिओमा को भी इस दुनिया की ऊँच नीच और सुख दुख के बारे में ख़ूब समझाया। शिओमा से मैंने कहा—"शिओसामा! देख, आज तक अपन दोनों समझते थे कि अपने समान सुखी इस संसार में कोई नहीं होगा और इस सुख का अंत कभी न होगा; परन्तु स्वप्न के समान अपने सुख का शीघ्र ही अंत हो गया। इसके लिए अब अधिक चिंता करके अपने शरीर को नष्ट करना व्यर्थ है। ईश्वर इस जीव को संसार में जैसा रखे वैसा रहना ही पड़ता है; इसके लिए कोई चारा नहीं।

लसेटा के हाथ में मैं तुमको छोड़ देता हूँ। यह अपने लिए माता के समान है। यह तुमको किसी प्रकार का क्लेश नहीं होने देगी। इसके सिवाय तुम्हारे माता-पिता और कुटुम्बी भी हैं इसलिए तुमको कोई दुख न होगा।

शिओमा! अब तुम मुझ अभागे को भूल जाओ। अपना मन तेरे पास छोड़ केवल तन लेकर मैं अब चला। तेरी स्वर्गीय सुन्दरता की रूप में और तेरा पवित्र प्रेम पुत्र रूप में मेरे हृदय में सदा वास करेंगे। अब तू बिना विलम्ब जापान के बुड्ढे रईस के लड़के के साथ

विवाह कर लें; नहीं तो उस पुराने कागज़ की शर्त के अनुसार दोनों कुटुम्बों का महा अनर्थ होगा ''

मेरा इतना कहना सुन कर शिश्रोमा विलप विलप कर रोती हुई तेज़ी से कहने लगी—

''चाहे सूरज इधर का उधर हो जाय, मैं किसी दूसरे के साथ शादी नहीं करने की। मुझे छोड़ कर तुम कहीं मत जाना''।

इतना कह कर शिश्रोमा ज़मीन पर गिर पड़ी। वह बे सुध होगई।

मैं शिश्रोमा के पास से चलने की बहुत कुछ कोशिश करता था परन्तु पैर नहीं उठते थे। सिर पर इतना बोझा मालूम होता था कि मानो पहाड़ रखा गया हो। इतने में दूसरे कमरे से शिश्रोमा के वृद्ध माता और पिता वहाँ आए। मैंने उनको सादर प्रणाम किया। उन्हों ने कहा—''बेटा! तुम अभागे नहीं हो, हम ही अभागे हैं जो एक ही कन्या-रत्न पाकर तुम जैसे योग्य वर को नहीं दे सके। तुम अब जाकर संसार में अपना भाग्य चमका लो। तुमको शिश्रोमा जैसी अनेक राजकुमारियाँ मिलेंगी''।

मैंने एक बार मूर्छित शिश्रोमा की ओर देखा और अपने दिल को ख़ूब कड़ा करके अत्यन्त कठिनता से मैं शिश्रोमा के यहां से चला और सीधा अपना जहाज़ ''शिश्रोमा'' का रास्ता लिया।

जहाज़ पर पहुँचते पहुँचते मैं पसीने से तर बतर हो गया। शरीर कांपने लगा। दिल धड़कने लगा। सिर में चक्कर आने लगे। जहाज़ का लंगर उठाने और सीधा जापान का रास्ता लेने के लिए मैंने मल्लाहों को हुक्म दिया और मैं शिश्रोमा की मूर्छित मूर्ति को अपने हृदय में धर जहाज़ के एक कमरे में पड़ा रहा।

समय पर जहाज़ जापान के तट पर जा लगा। मेरे शहर के बंदर में वह रोका गया। मुझे लेने के लिए मेरे कुटुम्बी और शहर के बहुत

से लोग बन्दर पर आए। परन्तु मैं जहाज़ से नहीं उतरा। क्योंकि शिओमा के वियोग से मेरा दिल टूट गया था और उसके सबब से मैं बीमार भी हो गया था। मुझे खाना पीना कुछ न भाता था।

चीन के एक अच्छे वैद्य ने मुझे सलाह दी थी कि कुछ दिन समुद्र-यात्रा करने से मुझे फ़ायदा होगा और शिओमा से अलग होने का दुःख भी दूर होगा।

उसी सलाह के अनुसार मैं समुद्र-यात्रा के लिए तैयार हुआ। पूरे तीन साल के लिए खाने पीने का सब सामान मैंने जहाज़ में रखवाया। कोई चीज़ नहीं छोड़ी गई जिसके न होने से किसी प्रकार की तकलीफ़ हो। याने ज़रूरत की हर क़िस्म की चीजें जहाज़ में रखी गईं।

कोई पांच सात नौकरों को लेकर मैं जहाज़ पर सवार ह समुद्र-यात्रा के लिए रवाना हुआ।

मेरे साथ के आदमियों में एक बुड्ढा जापानी था। उसका नाम माशिगाटा था। गोया वह सब आदमियों पर जमादार था। माशिगाटा बुड्ढा तो था परन्तु वह बड़ा बलवान्, बुद्धिमान और चतुर आदमी था। वह इमानदार भी पक्का था।

समुद्र में इधर उधर घूमते घामते हम लोग कई महीनों में जापान के पूर्व में एक द्वीप में पहुँचे। उस द्वीप में एक असभ्य जंगली जाति के लोग थे। वे इतने असभ्य थे कि स्त्री पुरुष सब नग्न रहते थे। वे लोग जंगली फल कांदा और जंगली जानवरों को मार कर खाते थे और अपना जीवन आनन्द-पूर्वक बिताते थे। वे लोग बात चीत करना बिलकुल नहीं जानते थे। वे सिर्फ़ इशारों से अपने दिल की बात दूसरों पर ज़ाहिर करते थे। उन लोगों को देख कर हम लोग हैरान थे। जब पहिले पहिल हम लोग उस द्वीप में पहुँचे तब वे लोग हमें देख कर

बहुत डर गए थे। परन्तु थोड़े ही समय में वे लोग हम से .खूब हिल गए। उनको खाने के लिए हमने अच्छी अच्छी चीज़ें दीं, जिन को खाकर वे बहुत .खुश हुए।

उन लोगों की जाति का नाम हमने मूसा रखा, क्योंकि वे मूसों—चूहों—के माफ़िक बिल कंदराओं में रहते थे।

वे लोग बिलकुल पशुओं के माफिक झुंड के झुंड एक साथ रहते थे। खड़े खड़े, बैठे बैठे या सोते सोते भी मलमूत्र करते थे। उन में शादी विवाह का रिवाज नहीं था, जहां चाहे तहां "मन मानी घर जानी" चलती थी।

उन लोगों की हालत पर मुझे दया आई। उन लोगों के साथ कुछ दिन रह कर उन लोगों को कुछ सभ्यता सिखाने का मैंने विचार किया। मेरे साथ के सब आदमी जापानी भाषा लिखना पढ़ना अच्छी तरह जानते थे और मूसा लोग उच्चारण करना जानते थे परन्तु उनको कोई शब्द मालूम नहीं था, इस लिए वे बातचीत नहीं कर सकते थे।

मेरे आदमी उन लोगों को 'मैं,' 'तू,' 'वह,' 'मा,' 'बाप,' 'झाड़,' 'पौधा' आदि शब्द सिखाने लगे। वे लोग भी बड़े शौक से सीखने लगे।

एक दिन बड़ी दिल्लगी हुई। मेरे साथ का माशिगाटा अपने साथ के एक आदमी के पहिने हुए कपड़े को पकड़ कर मूसा लोगों को इशारे से बताने लगा कि इस तरह तुम लोग भी कपड़े पहिनो। परन्तु वे इशारे को समझे नहीं और क्या जाने क्या समझ कर उनमें से हर एक ने एक एक मूसी को पकड़ लिया। बाद बहुत कुछ इशारों से समझाने पर उन लोगों ने स्त्रियों को छोड़ दिए।

मूसी स्त्रियां जंगली होने पर भी बड़ी .खूबसूरत थीं। जवान औरतों

की ताे वात ही निराली थी। वे बिना कपड़े लत्ते के भी वहुत अच्छी भाती थीं। उनमें से कई युवतियाँ हमारे जहाज़ पर आया जाया करती थीं। वुड्ढा माशिगाटा को छोड़ कर मेरे साथ के सब ही आदमी अच्छे जवान और पक्के मसख़रे थे। वे उन युवतियों को ख़ूब खिलाते पिलाते थे। उन्होंने उनको कपड़ा पहिनना भी वहुत कुछ सिखलाया था। वात यहाँ तक पहुँची कि वे युवतियाँ जहाज़ ही पर रात दिन रहने लगीं। यह वात वुड्ढा-माशिगाटा को अच्छी नहीं लगती थी। वह अकसर मेरे से इस वावत शिकायत किया करता था। मगर मैं लाचार था। मैं कुछ न कर सकता था। इसका सवव भी था। वह यह था कि मैं यह चाहता था कि किसी तरह वे जंगली लोग हम लोगों में हिल मिल कर कुछ वोलना सीखें और मनुष्यों की तरह रहना सीखें।

हम लोगों ने उन लोगों को वहुत कुछ रहन सहन सिखलाए। झाड़ों के रस्सों से कपड़े वना कर पहिनना हमने उनको सिखलाया। मिट्टी के वर्तन वनाना, झोपड़ियाँ वना कर उनमें रहना आदि कई वातें हमने उनको सिखलाईं।

मतलव यह है कि हम लोगों ने एक साल तक उस द्वीप में रह कर उन जंगली असभ्य लोगों को सभ्यता की एक सीढ़ी तक पहुंचा दिये।

मैं ऐसा आदमी नहीं था, जैसा कि वर्षों से मैं हिमालय की चोटी पर वैठा हुआ हिन्दुस्तान के कई सभ्य महाशयों को देखता आरहा हूँ जो अपने ही भाई वंधुओं को नीच समझते और उनकी गिरी पड़ी हालत को सुधारने की कोशिश करना तो दर किनार उल्टा उनको नीच समझ कर उनको छूने ही से अपने को अपवित्र समझते हैं। हिन्दुस्तान भर में मैं ऐसे सभ्य और विद्वान् महाशयों को देख

रहा हूँ जो कुत्ता-बिल्ली को तो बड़े प्यार से अपने पलंग पर बैठावेंगे; उनको अपनी गोद में लेवेंगे और यहाँ तक कि वे उनको चूमेंगे भी ! और अपने ही भाई-बंधुओं को नीच समझेंगे। और उनको छूना छूत और पाप समझेंगे !! हा—समय और समझ की बलिहारी है !!!

× × × × × ×

मेरी युवा-अवस्था का तृतीय चरण

—:-○-:—

मूसा लोगों को पढ़ना लिखना और रहन सहन सिखाने के लिए अपने साथ के कुछ आदमियों को छोड़ कर हम लोग जहाज़ पर बैठ गए और दक्षिण की ओर रवाना हुए। कई दिन चल कर हम लोग हिन्द महासागर में पहुँचे। उस समय यंत्र के देखने से मालूम हुआ कि हम लोग ठीक हिन्दुस्तान के दक्षिण में थे। परन्तु हिन्दुस्तान के तट से हम सैकड़ों मील की दूरी पर थे।

महीनों तक हमको कोई देश या द्वीप नज़र नहीं आया। लोग चाहते थे कि कोई देश या द्वीप नज़र आता तो वहाँ उतर कुछ दिन दिल बहलाते। इसी विचार से हम लोग जहाज़ को सैकड़ों मील उत्तर दक्षिण, पूर्व पश्चिम दौड़ाने लगे। एक दिन दक्षिण की ओर एक टीले के माफ़िक कुछ दिखाई दिया। हम उसी ओर बढ़े। कुछ देर में हम वहाँ पहुँचे तो एक द्वीप दिखाई दिया। द्वीप सघन वन से ढका हुआ था और वह बड़ा रमणीय दिखाई देता था।

यद्यपि शिओमा के लिए मैं दिनरात आँसू बहाता रहता था और शिओमा की भव्यमूर्ति मेरे हृदय-पटल से पल भर भी नहीं हटती थी, परन्तु उस समय हरे भरे द्वीप को देख कर एक बार मेरा हृदय फूल आया। मैंने बुड्ढा माशिगाटा को अपने पास बुला कर कहा:—

मैं—देखो जी, माशिगाटा! मैं इस द्वीप में कम से कम आठ महीने रहना चाहता हूँ।

माशिगाटा—जी हाँ, अच्छी बात है; मगर इस द्वीप में मनुष्य हैं या राक्षस सो भी पहले देख लेना चाहिए।

मैं—ठीक है; देख लेंगे।

इतने में जहाज़ द्विप के किनारे जा लगा। मैंने तोप दागने को हुक्म दिया। तोप दागी गई। किसी खास मौके की ज़रूरत के लिए एक तोप जहाज़ पर रखी गई थी। तोप चलाने का मेरा मतलब यह था कि अगर आदमी या कोई जानवर द्वीप में होंगे तो इधर उधर चलते भागते दिखाई देवेंगे। परन्तु तोप दगने पर कोई मनुष्य या जानवर दिखाई नहीं दिए। कुछ समुद्री पक्षी अवश्य इधर उधर उड़ रहे थे।

हम लोग जहाज़ से उतर कर किनारे पर आए। ज़मीन पर समुद्री जीवों के कई चिह्न दिखाई दिए। मनुष्य या और कोई जानवर के कोई चिह्न नहीं दिखाई दिए।

मैंने उस दिन अपनी बन्दूक से कई समुद्री पक्षी मारे। उस द्वीप में हम लोग आनन्द से रहने लगे। मैं रोज़ एक तरफ़ जाकर शिकार खेलता था।

एक दिन माशिगाटा और एक नौकर को लेकर शिकार के लिए बहुत दूर निकल गया।

घने जंगलों में होते हुए हम तीनों कोई दस मील तक अपने अड्डे से निकल गए। चलते चलते हम लोगों को एक घने जंगल के पास एक जानवर दिखाई दिया। जानवर को देख कर हम लोगों को बड़ा अचरज हुआ।

वह जानवर आदमी के रूप में दिखाई देता था इसलिए हम लोग और भी चक्कर में पड़े!! और भी अचरज की बात तो यह थी कि वह आदमी के रूप का जानवर हम लोगों की ही ओर भागता हुआ चला आ रहा था।

हम लोग उसको देख कर बड़े अकचका गए। उसे देख कर हम लोग हैरान परेशान थे। उस जानवर के बारे में हम लोगों में इस तरह बात-चीत होने लगी:—

मैं—क्यों यह क्या आरहा है?

माशिगाटा—अच्छी तरह देखे बिना मैं नहीं कह सकता कि यह आदमी है या हैवान।

मैं—मैं समझता हूँ कि यह राक्षस या ऐसाही कोई भयानक जंतु होगा।

नौकर—जी हाँ, नहीं तो यहाँ आदमी कहाँ से आवेगा।

मैं—अब तो जानवर नज़दीक आ रहा है; मैं गोली चलाता हूँ, नहीं तो शायद यह हम लोगों पर हमला करे।

माशिगाटा—नहीं नहीं अभी गोली न चलाइए; अभी इसे और नज़दीक आने दीजिए; देखें यह आदमी है या क्या और हम लोगों पर हमला करता है या नहीं।

नौकर—वाह बुड्ढे जमादार! आप मरना चाहते हो तो क्या दूसरों को भी साथ लेना चाहते हो? जब वह हमला ही कर देगा तब क्या करोगे; उसके हमला करने के पहले ही उसे मार गिराना चाहिए।

माशिगाटा—चुप रह; नाहक बड़बड़ाता है।

नौकर—(मनही मन) 'उँह' जब वह जानवर बुड्ढे पर हमला कर देगा तब मैं मियाँ का तमाशा देखूँगा।

माशिगाटा और नौकर तो बातें कर रहे थे और मैं बराबर ध्यान देकर उसी ओर देख रहा था जिधर से वह अद्भुत जानवर आरहा था। थोड़ी देर में वह हम लोगों के नज़दीक आगया। बिना किसी से पूछे और बिना कुछ सोचे मैंने बन्दूक़ की एक आवाज़ आकाश की

और छोड़ दी। इधर धम्म से आवाज़ हुई और उधर आनेवाला जानवर एकदम ज़मीन पर गिर पड़ा। माशिगाटा कुछ बड़बड़ाता हुआ और दौड़ता हुआ उसके पास गया। साथ ही मैं और नौकर भी गए।

वहां पहुंच कर हम लोगों ने क्या देखा? हा! ईश्वर वैसा दृश्य कभी किसी को न दिखावे। हम लोगों के सामने एक परम सुन्दर रूपवती युवती बेहोश पड़ी हुई है। लम्बे लम्बे काले काले बाल कमर तक लटके हुए हैं! बदन पर कपड़े के नाम से सिर्फ़ एक पुराना फटा हुआ टुकड़ा उसके कमर के चारों ओर लिपटा हुआ है; मगर बदन पर ज़ेवर क़ीमती पड़े हुए हैं!!!

युवती को बेहोश देख कर मेरा हृदय पिघल गया। एक तो शिओमा की मूर्च्छित मूर्ति मेरे हृदय में थी ही। इस नवीन दृश्य को देख मेरा हृदय पानी पानी हो गया। जब मैं यह सोचने लगता कि मेरी ही बन्दूक़ की आवाज़ से युवती बेहोश हो कर गिर पड़ी है तब मेरी अजब हालत हो जाती थी—मैं अपने आप को महा पापी और महा मूर्ख समझता था!!!

माशिगाटा चुपचाप युवती को होश में लाने के लिए कोशिश करने लगा। वह उस पर पानी छिड़कता जाता था और थोड़ा थोड़ा पानी उसके मुँह में भी डालता जाता था। थोड़ी देर में युवती कुछ कुछ हिलने डुलने लगी। तब नौकर को युवती की सेवा में लगा कर माशिगाटा मेरी ओर देख कर कहने लगा:—

माशिगाटा—आप तो बिना सोचे समझे कुछ का कुछ कर देते हैं और पीछे अफ़सोस करते हैं; अब पछताने से क्या फ़ायदा। आप के कारण बिचारी शिओमा की कैसी बुरी दशा हो गई। अब मुझे आशा नहीं कि वह इस संसार में होगी। फिर आप अब यह भी एक स्त्री-हत्या कर ही चुके थे।

माशिगाटा का इतना कहना सुन कर मेरी आँखों से आसू बहने लगे। मुझे समझा कर माशिगाटा ने कहा कि यह युवती .जरा ही देर में होश में आकर उठ बैठेगी।

मैं युवती के पास ही बैठ कर आंसू बहा रहा था। इतने में युवती होश में आई। होश में आते ही मुझे अपने सामने देख कर वह मुझ पर लपक पड़ी। मैंने उसे सम्हाला। वह फिर कुछ बेहोश होकर मेरी गोद में पड़ी रही। उस वक्त मुझे ऐसा मालूम होने लगा कि मैं चीन में शिओमा के पास हूँ। शिओमा ही मेरी गोद में सोई हुई है। मैं सोचने लगता कि क्या यह शिओमा ही है।

फिर मैंने माशिगाटा से यों बातें करना शुरू किया:—

मैं—क्या यह कोई राजकुमारी है या वन देवी?

माशिगाटा—कुछ दिन में सब हाल आपही खुल जायँ मार नज़-

(मनही मन मुसकराते हुए) शायद यह शिओम स्या और

मैं—यह यहां पर कब और कैसे आई होगी?

माशिगाटा—जब इस युवती की कमज़ोरी कम हो या दूसरों

यह .खुद अपनी कहानी कहेगी।

मैं—ठीक है।

ज़र देगा

नौकर—शिओमा गई तो गई, अब यह प्रसाद तो ईश्वर ही र

दिया है।

माशिगाटा—चुप रह; बक बक करता है। हवा कर उसको (युवती को)।

इसी प्रकार हम लोग कई तरह की बातें कर रहे थे, इतने में युवती अच्छी तरह होश में आई और सम्हाल कर मेरी गोद के सहारे बैठ गई। युवती के वदन पर सिर्फ़ एक फटा हुआ कपड़े का टुकड़ा उसके कमर में पड़ा हुआ था। बाक़ी सारे बदन पर उसके लम्बे लम्बे

काले वाल ही विखरे हुए थे। देखने से ऐसा मालूम होता था कि वहुत समय से उसके वालों पर कंघी नहीं चलाई गई थी।

मैंने अपनी एक धोती उसे पहिनने के लिए और एक वदन पर ओढ़ने के लिए दी। एक कुंड में नहा कर युवती ने कपड़े पहिन लिए। उसके वदन पर ज़ेवर वहुत क़ीमती थे। उनको देख कर हम लोग हैरान थे।

उसके पास कपड़े न होने का सवव यह था कि उसको उस द्वीप में अकेली रहते रहते वहुत समय हो चुका था।

उस युवती को लेकर हम लोग जहाज़ पर आए। युवती को देख जहाज़ पर के नौकर वड़े आश्चर्य चक्कर में पड़े। हम लोगों ने युवती को अच्छी तरह खिलाया पिलाया। वहुत से कपड़े जो जहाज़ पर थे, देख मेरा ऐई अच्छे अच्छे कपड़े मैंने युवती को दिए। युवती का रंग-मेरी ही वादिन वदलने लगा।

मेरी अजवदेन जव युवती जहाज़ के एक कमरे में शांत चित्त से बैठी मह मूर्ख! माशिगाटा मुझे उसके पास ले गया। वह युवती जव

मा एक अनोखी दृष्टि से देखती थी तव मैं अपने आप को भूल करने ल्था और उस वक्त ज़रा देर के लिए शिओमा की मूर्ति भी मेरे हृदय में ज़रा हट जाती थी।

माशिगाटा ने चीनी और जापानी भाषा में युवती से कई सवाल किए कि आपकी तवीयत कैसी है, कहाँ से यहाँ आना हुआ और आप कहाँ की रहने वाली हो इत्यादि। युवती चीनी या जापानी भाषा तो जानती ही नहीं थी, इसलिए माशिगाटा के सवालों को वह नहीं समझ सकती थी। लेकिन माशिगाटा के इशारों को वह कुछ कुछ समझती थी और रोती हुई कुछ जवाव भी देती थी। युवती का जवाव माशिगाटा नहीं समझ सकता था; परन्तु मैं कुछ कुछ समझता जाताथा

क्योंकि वह युवती एक ऐसी भाषा बोलती थी जिसमें संस्कृत के शब्द बहुत मिले हुए थे; और मैं संस्कृत .खूब जानता था।

मैंने उस युवती से संस्कृत में बात चीत करना शुरू किया। ईश्वर की कृपा से वह युवती भी संस्कृत बहुत अच्छी बोलने वाली निकली। संस्कृत में हम दोनों बातें करने लगे:—

मैं—आप का नाम क्या है?

युवती—मेरा नाम मणिका है।

मैं—हम लोगों को बहुत आश्चर्य हो रहा है कि आप कहाँ से किस तरह इस निर्जन वन में पहुँचीं और क्यों कर आप की यह हालत हुई? कृपा करके आप अपना सब हाल बतलाइए क्योंकि हम आप का हाल जानने के लिए अत्यन्त उत्सुक हो रहे हैं।

मणिका—(रोती हुई) मेरी दुर्दशा का हाल आप सुन के क्या करेंगे। मेरी ऐसी दुःखी अभागिनी संसार में को[illegible]। नहीं। मेरी दुःख-कथा आप सुनेंगे तो आपके दिल [illegible] भी बहुत चोट पहुँचेगी; इससे न सुनना ही उत्तम है।

मैं—चिन्ता नहीं; आप अपना हाल बतलाइए, क्योंकि आप का सब वृत्तांत आदि से अंत तक जब तक हम नहीं सुनेंगे तब तक हम लोगों को शांति नहीं मिलेगी। हम भी तो इस संसार में सुख दुःख के धक्के खाने वाले जीव हैं।

मणिका—(रोती रोती कहने लगी) अच्छा सुनिए:—भारत महा देश के दक्षिण में एक मलाबार प्रांत है। उस प्रांत में समुद्र के किनारे बसी हुई एक सुन्दर नगरी में मेरा पिता रहता था। मेरा पिता हीरा मोती मणि इत्यादि का व्यापार करता था। उसका व्यापार सारे दक्षिण भारत में फैला हुआ था। मेरे पिता का एक

बहुत पुराना बुड्ढा नौकर था। वही इस निर्जन परंतु हीरे मोतियों से भरा हुआ द्वीप का पता जानता था।

मेरे माता पिता के मैं अकेली पैदा हुई। मेरे सिवाय उनका कोई नहीं था। मैं जब दो वर्ष की थी तभी मेरी मा मर गई। मेरी एक सौतेली मा भी थी। मेरी माता के मरने के बाद मेरा पालन पोषण मेरी सौतेली मा मेरी माता से भी बढ़ कर करती रही। जब मैं कुछ बड़ी हुई तब मैं देखती थी कि मेरी सौतेली मा मेरी स्वर्ग-वासिनी माता के लिए रोज़ चार आंसू बहाए बिना नहीं रहती थी। मुझे अच्छी तरह मालूम हो गया था कि मेरी दोनों माताएं पवित्र हृदय वाली थीं; दोनों एक दूसरे को देखे बिना नहीं रह सकती थीं। जब से मेरी माता मर गई तब से उसके लिए मेरी सौतेली मा महा दुःखित रहा करती थी और उसी दुःख से अंत में बीमार हो कर वह भी मरगई।

इतना कह कर मणिका रोने लगी। मैंने उसे समझा बुझा कर शांत कर दिया और कुछ देर बाद फिर मैंने उससे सवाल किया:—

मैं—फिर क्या हुआ?

मणिका—मेरी दोनों माताओं के मरने के बाद मेरा पालन पोषण मेरे पिता से हुआ। मुझे लिखना पढ़ना सिखाया गया। संसार में आनन्दपूर्वक जीवन बिताने की सभी बातें मुझे अच्छी तरह सिखाई गईं। मेरे पिता ने मुझे एक उत्तम गृहलक्ष्मी के योग्य बनाने में कोई बात उठा न रखी।

जब मैं सोलह वर्ष की हुई तब मेरे पिता ने मेरा विवाह किसी अच्छे और भारी कुटुम्ब में करने का विचार किया। उन्होंने यह भी विचार किया था कि मेरा विवाह ख़ूब धूम धाम के साथ किया जाय। क्योंकि मैं ही एक उनकी पुत्री थी। मेरे पिता के पास धन की कमी

नहीं थी परन्तु उन्होंने मेरे विवाह में .खूब धन .खर्च करने का विचार किया था।

एक दिन मेरे पिता के बुड्ढे नौकर ने मेरे पिता से कहा कि मणिका की शादी में हीरे मोती .खूब .खर्च होंगे इस लिए आप मेरे साथ एक द्वीप में चलिए; वहाँ से अपन बहुत से हीरे मोती लावेंगे; मैं उस द्वीप का पता जानता हूँ; वहाँ कोई मनुष्य या जानवर नहीं रहते, वहाँ सिर्फ़ हीरे मोती भरे पड़े हुए हैं।

बुड्ढे नौकर की बात सुन कर हीरा मोती ले जाने के लिए मेरे पिता एक बड़ी नाव पर बैठ कर इस द्वीप में आए। अपने पिता के साथ मैं भी यहाँ आई।

बहुत से हीरे मोती नाव में भर दिए गए। बोझ के मारे नाव अध डूबी हो रही थी; मगर लालच बहुत बुरी बला होती है, नाव में .खूब ही हीरे मोती भरे गए। लालच के मारे किसी ने यह नहीं सोचा कि इतना बोझा नाव सह सकेगी या नहीं।

हम सब नाव पर बैठ गए और नाव खे दी गई। कोई पाव मील भी जाने नहीं पाए थे कि समुद्र की एक ही लहर के धक्के से नाव समुद्र-गर्भ में बैठने लगी! उसी वक्त मेरे पिता ने बुड्ढे नौकर को कहा कि मणिका को बचाओ। बुड्ढा नौकर मुझे ले कर [illegible] प्रकार तैरता हुआ फिर इसी द्वीप में आया। मेरे पिता [illegible] इस दूसरे आदमियों का कुछ पता नहीं मिला!!!

इतना कह मणिका फूट फूट कर रोने लगी। मणिका का [illegible] दुःखमय वृत्तांत सुनकर मेरा हृदय टुकड़े टुकड़े हो गया। मैं भी [illegible] दुःखी हुआ। कुछ देर ठहर कर मणिका फिर कहने लगी:—

"मेरे दुर्भाग्य से इस महा-भयङ्कर घटना को हो कर अब तक कोई डेढ़ साल हो गए, तब से मैं अकेली यहाँ हूँ।

बुड्ढा नौकर कुछ दिन तक जीता रहा मगर थोड़े दिन बाद वह भी बुख़ार से यहीं मर गया। मैं अभागिनी ही आपके दर्शन करने के लिए अब तक यहाँ जीती जागती हूँ।

जब से मैं आप लोगों में मिल गई तब से मैं अपने आपको ऐसा समझती हूं कि मैं इस पृथ्वी पर जीवित नहीं हूं, मैं किसी दूसरे लोक में हूं और आप लोग मनुष्य नहीं परन्तु ईश्वर के दूत हैं जो मेरी महा दुःखित आत्मा को शांति देने के लिए यहाँ आए !!!"

यह सब सुन कर मेरा हृदय पिघल गया। तब मैं समझने लगा कि इस संसार में सभी जीवों को कभी सुख और कभी दुःख भोगना ही पड़ता है। सुख दुःख से किसी जीव का छुटकारा नहीं।

मणिका का कुल हाल हम लोगों को मालूम हो गया—मणिका एक ऊँचे घराने की हिन्दू लडकी है; उसकी अवस्था कोई सोलह वर्ष की है; सुन्दरता में वह शिओमा से बढ़ के है मगर कम नहीं! भारत देश में मलाबारी सुन्दरता जगद्विख्यात ही है! मणिका संस्कृत में कविता करना जानती है और उसे संस्कृत साहित्य का अच्छा ज्ञान है। मणिका एक होनहार गृहलक्ष्मी है। उसका विवाह अभी तक नहीं हुआ।

एक दिन माशिगाटा से मैंने कहा कि मणिका को भारत देश के तट पर पहुँचा देना चाहिए जिसमें वह अपने देश को चली जावे। माशिगाटा ने मुझे जवाब दिया कि आप मणिका से पूछ लेवें कि उसके और कोई कुटुम्बी हैं या नहीं और वह अपने देश को जाना चाहती है या नहीं। यदि वह अपने देश को नहीं जाना चाहे तो अपन उसको यहाँ अकेली छोड़ कर जा ही नहीं सकते और अपने को उसे अपने जापान देश को ले जाना ही होगा। इस पर मैंने मणिका से पूछा कि अगर तुम अपने देश को जाना चाहती हो तो हम पहुँचा

देने को तैयार हैं। जवाब में मणिका रोती हुई कहने लगी कि मैं
अपने देश को जाकर क्या करूँगी; मेरा वहाँ अब कोई नहीं। मैं नहीं
जाना चाहती। यदि मेरे सबब से आप लोगों को कोई तकलीफ़ होती
हो तो मुझे इसी निर्जन द्वीप में छोड़ जाइए। मैं यहां अकेली रह कर
इस दुःखमय संसार-सागर को पार करूँगी।

मणिका की बातें सुनकर मेरा दिल भर आया। मैं कुछ देर के
लिए चुप हो गया। फिर मैंने मणिका से कहा कि आज से मैं जैसा
रहूँगा वैसा तुमको भी रखूँगा और तुम्हारे सुख दुःख को मैं अपना
सुख दुःख समझूँगा। तुम किसी बात की चिन्ता न करना।

तब से मणिका बड़े स्नेह से मेरे साथ रहने लगी। उसके साथ
सम्भाषण करने में मुझे भी बड़ा आनन्द आने लगा। वह एक प्रक[illegible]
से मेरे जहाज़ की मालिकिन सी हो कर रहने लगी। [illegible] और
पिलाने का काम उसने अपने हाथ में लिया। जहा[illegible] यह [illegible] मुझे खिलाने
हुक्म को मानने लगे।

हमको जापान छोड़े दो साल के क़रीब [illegible] के सब लोग उसके
जल्द जापान लौट जाने का हुआ। माशिगाट[illegible] हो गए थे। मेरा इरादा
करने के लिए कहा। उसने कहा कि परसों [illegible] से मैंने चलने की तैयारी
इस द्वीप के हीरे के खदान से बड़े बड़े हीरे [illegible]लेंगे; कल दिन भर हम
दूसरे दिन कोई पचास करोड़ रुपए के हीरे लाकर जहाज़ में भरेंगे।
तीसरे दिन जहाज़ का लंगर खोल दिया गया। जहाज़ में भरे गए और
रास्ते में मैं चीनी और जापानी भाषा मणिका को पढ़ाता था [illegible]ने लगा।
मलावारी भाषा मुझे पढ़ाती थी। संस्कृत तो हम दोनों अच्छी तरह[illegible] वह
जानते ही थे।

एक दिन मैंने अपना पहिले का पूरा हाल मणिका को कह
सुनाया। राजकुमारी शिरोमा से मेरा मिलाप और उससे मेरा विछोह

का पूरा वृत्तांत सुन कर मणिका का कोमल हृदय उमड़ आया। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। वह कहने लगी कि इस संसार में किसी भी जीव को दुःख ही अधिक भोगने पड़ते हैं; सुख नाम मात्र के लिए स्वप्न सा निकल जाता है।

मैंने कहा—शिओमा को अपने हृदय से हटाने के लिए मैं अनेक प्रकार से प्रयत्न करता हूँ परन्तु उसकी मूर्त्ति मेरे हृदय से नहीं हटती।

मणिका—आप शिओमा को भूल जाने की क्यों कोशिश करते हैं; उस बिचारी को तो आपही के कारण दारुण दुःख सहना पड़ा। उसकी कोई ग़ल्ती नहीं।

मैं—अगर उसकी शादी हो गई होगी तो ?

मणिका—तो क्या हर्ज है; उसको शुभ आशीर्वाद दीजिए जिसमें वह पुत्रवती हो और सौ वर्ष तक सौभाग्यवती बनी रहे। शिओमा की शादी हो जाने पर भी यदि आप उसकी याद हमेशा रखेंगे और उसकी भलाई चाहेंगे तो इसमें आपही की सज्जनता और उदारता है।

मैं—परन्तु हृदय में एक के रहते दूसरी को जगह कहां से मिलेगी—एक म्यान में दो तलवार ?

मणिका—(सकुचाती और मुस्कराती हुई) तलवार जैसी कठोर और भयानक वस्तु वास्तव में एक म्यान में नहीं रह सकती परन्तु सुन्दर २ फूलों से (अच्छे अच्छे गुणों से) गुथी हुई दो तीन मालाएं यदि किसी सज्जन के कंठ में डाली जायं तो उसकी शोभा—आभा बहुत अधिक बढ़ जाती है। और देखिए, दूर दूर देशों के पहाड़ों से निकली हुई दो नदियाँ यदि एक ही स्थान में किसी एक ही गंभीर समुद्र में गिरती हों तो उन दोनों

नदियों का प्रेमरूपी जल अंत में एक ही होकर उस समुद्र में सम्मिलित हो जाता है।

मैं—तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आई।

मणिका—मेरी बातें आपकी समझ में न आई हों तो चिन्ता नहीं। परन्तु यह सत्य है कि ईश्वर जैसा रक्खे वैसा सांसारिक जीवों को रहना ही पड़ता है।

मणिका की युक्ति-पूर्ण बातें सुनकर मैं अवाक् रह गया! जितना ही अधिक मैं उससे वाद-विवाद करता था उतनाही अधिक मैं उसके वश होता जाता था!! उसकी मीठी मीठी बातें वशीकरण मंत्र के समान थीं।!!!

× × × × × × ×

हमारा जहाज़ जापान समुद्र में पहुँच गया था। जहाज़ चला जा रहा था। कुछ दूर पर कुछ हल्ला हम लोगों को सुनाई दिया। मैं उस हल्ला को चुप चाप सुनता रहा और समझता रहा कि कोई मच्छी पकड़ने वाले होंगे। परन्तु दूरदेशी चतुर माशिगाटा दौड़ता हुआ मेरे पास आकर कहने लगा:—"वह सामने देखिए किसी का जहाज़ डूब रहा है, आप ख़ुद अपने जहाज़ को अति शीघ्र चला कर वहाँ पहुँचाइए और उन डूबते हुए यात्रियों को बचाइए"।

सुनते ही झट मैं यंत्र के कमरे में गया और जहाज़ की चाल मैंने इतनी तेज़ कर दी कि निमिष मात्र में हमारा जहाज़ डूबते हुए जहाज़ के पास पहुँच गया। वहाँ पहुँचते ही हम लोग क्या देखते हैं कि एक जहाज़ समुद्र में डूब रहा है। उसका बहुत सा हिस्सा पानी के अन्दर हो गया है। सिर्फ़ चार आदमी जहाज़ के सब से ऊपर के हिस्से के रस्से पकड़े हुए डूबा ही चाहते हैं। बड़ी कठिनता से उन चारों

आदमियों को हम लोग अपने जहाज़ पर लाए। इतने में वह जहाज़ डूब कर समुद्र-गर्भ में बैठ गया।

उन चारों में से तीन स्त्रियाँ थीं और एक मल्लाह था। डर और घबराहट के मारे और पेटों में पानी जाने के कारण स्त्रियाँ बेहोश हो गई थीं।

मणिका उनकी सेवा में लग गई। उनको होश में लाने के लिए वह यत्न करने लगी। उनके भीगे हुए कपड़ों को अलग करके सूखे और गरम कपड़े उसने उनके बदन पर रक्खे। कुछ देर में वे स्त्रियाँ होश में आईं। वे बैठ गईं। मणिका ने उन स्त्रियों को एक गरम कमरे में ले जाकर बैठाई।

मैं अपने कमरे में जा बैठा। डूबते हुए जहाज़ का भयानक दृश्य और उन स्त्रियों की शोचनीय अवस्था देख कर मेरा दिल डगमगा गया। मैं गंभीर विचार-सागर में डूब गया !! उस वक्त मेरी अजब हालत थी !!! विद्यालय में राजकुमारी शिओमा से मेरे मिलाप की बातें; शिओमा की मेरे साथ अगाध प्रेम की बातें; शिओमा से मेरे महादारुण दु:खमय विछोह की बातें; मणिका का हृदय-विदारक वृत्तान्त और सामने डूबती हुई अबला स्त्रियों की दुर्दशा आदि की बातें मेरे सिर में चक्कर लगाने लगीं !!!

यह सारा संसार दु:खों ही से भरा हुआ समुद्र सा मुझे दिखने लगा ! मेरे चारों ओर महा घोर अंधकार छा गया !! मेरा जीवन मुझे भारी मालूम होने लगा और मैं पागल सा हो गया !!! बड़ी कठिनता से मैंने माशिगाटा से कहा:—

मैं—(रोता हुआ) देखो माशिगाटा ! तुमको मैं अपना एक निजी बुज़ुर्ग के समान समझता हूँ।

माशिगाटा—ऐसा समझना आप की कृपा है; मैं आप का सेवक हूँ।

यह तन रहते मैं आप को कभी छोड़ने का नहीं; परन्तु बताइए आज आप इतने दुःखी क्यों हैं ?

मैं—(रोता हुआ) यदि राजकुमारी शिओमा जीवित हो तो उसको मेरा सब हाल कह देना और मुझ अभागे को भूल जाने के लिए उससे कहना।

माशिगाटा—मैं कहूँगा और आप कहाँ जावेंगे ?

मैं—मणिका को भी सुख से रखना और हो सके तो उसे उसके देश को पहुँचा देना।

माशिगाटा—मैं पहुँचाऊँगा और आप कहाँ जावेंगे; मैं नहीं समझता आप क्या बोल रहे हैं ?

मैं—और अभी जो तीन डूबती हुई विदेशी स्त्रियों को अपने बचाए हैं उनको भी यत्नपूर्वक उनके देश को पहुँचा देना। जहाज़ में जितना धन भरा हुआ है वह सब तुम्हारा है।

इतना कह कर मैं एकदम समुद्र में कूद पड़ा और मेरे साथ ही मणिका भी कूद पड़ी !!!

हम दोनों को डूबते हुए देख कर माशिगाटा झट समुद्र में कूद पड़ा और हम दोनों को पकड़ कर तैरता हुआ जहाज़ पर ले आया। एकाएक अपने आप अपनी जान गँवाने की कोशिश करते मुझे देख माशिगाटा बहुत नाराज़ हुआ। उसने मुझे बहुत कुछ सुनाया। मणिका मेरे पागलपन पर रोने लगी।

इसके बाद मैं और मणिका फिर शान्तिपूर्वक रहने लगे। समुद्र में डूबती हुई जिन तीन स्त्रियों को हम लोगों ने बचाया था, उनमें एक सुन्दर रूपवती युवती थी। दो स्त्रियाँ बुड्ढी थीं। युवती बहुत कमज़ोर दीखती थी। थोड़े ही समय में उस युवती से और मणिका से बहुत घनिष्ट दोस्ती हो गई। दोनों एक साथ रहने लगीं। दोनों में गाढ़ा स्नेह पैदा हो गया। दोनों एक दूसरे को बहिन कहने लगीं।

मणिका आर्यकन्या होने के साथ ही वह अनेक संस्कृत-ग्रन्थ पढ़ी हुई थी। इसलिए वह शांतता और गंभीरता से आनन्दपूर्वक रहती थी। परन्तु उस नवीन युवती में अत्यन्त चंचलता, उग्रता और उत्सुकता पाई जाती थी। ऐसा मालूम होता था कि उस युवती के सरल हृदय में ऐसा कोई विषय डांवाडोल कर रहा था जो किसी समय उसका महान उद्देश का विषय था; उस युवती के रंग ढंग से ऐसा मालूम होता था कि वह अपना उद्देश जितना शीघ्र हो सके उतना शीघ्र हम लोगों के सामने प्रकट करना चाहती थी। उसकी चंचलता—उस की उत्सुकता—इतनी अधिक बढ़ गई थी कि वह एकाएक पागल सी हो गई थी !!

उस युवती की दशा देख मुझे दया आई। मैंने उसके साथ के मल्लाह को अपने कमरे में बुलवाया और उस युवती के विषय में कुल हाल दरियाफ़्त किया। मल्लाह ने आदि से अंत तक उस युवती का सारा वृत्तांत मुझे कह सुनाया।

मैं चुपचाप सुनता गया। मेरा शरीर पुलकायमान हो गया। आख़ीर में मल्लाह ने कहा—"राजकुमारी की इच्छा के विरुद्ध उसका पिता, अधिकारियों की आज्ञा से जापान की एक छोटी सी रियासत के राजकुमार के साथ उसका विवाह कर देने के लिए चीन से जापान ले जा रहा था। अचानक जहाज़ चट्टान से टकराकर डूब गया और आप ने हमें बचाया जिस राजकुमार के साथ राजकुमारी की शादी होने वाली थी वह भी जहाज़ के साथ समुद्र में डूब गया। यहाँ जो दो बुढ़िया हैं—उनमें से एक राजकुमारी की दाई है और दूसरी उसकी माँ।"

सब वृत्तांत सुनने पर असल बात मेरी समझ में अच्छी तरह आ गई। मेरा शरीर पुलकायमान हो गया। मेरी आँखें डबडबा आईं। मैं दौड़ता हुआ उस युवती के पास पहुँचा और मैंने उससे कहा:—

मैं—शिओमा ! शिओमा !! शिओमा !!!

युवती—तुम कौन ?

मैं—निओशिओ ।

मेरा नाम सुनते ही "हे मेरे प्राणाधार" कहती हुई राजकुमारी शिओमा झपट कर मुझ पर लपक पड़ी ।

× × × × × × + × × ×

बहुत देर तक सन्नाटा छाया रहा । तब मणिका ने अत्यन्त स्नेह और प्रफुल्लित हृदय से मुझे और राजकुमारी शिओमा को मेरे कमरे में ले जा कर बैठाई । शिओमा ने भी मणिका को प्रीतिपूर्वक अपने पास बैठाई ।

हम तीनों को एक जगह बैठे देख माशिगाटा आनन्द से प्रफुल्लित हो गया । उसकी आँखों से आनन्दाश्रु टपकने लगे । वह गद्गद कंठ से कहने लगा:—"आप के बुजुर्गों की और आप की सेवा जो आज तक मैंने की, उसका भरपूर फल आज मुझे ईश्वर ने दिया । ईश्वर आप तीनों का मंगल करे ।

इतने में शिओमा की माँ और उसकी दाई लसेटा भी वहाँ आई । हम तीनों ने उठ कर आदरपूर्वक शिओमा की माँ को प्रणाम किया । वह हम तीनों को हृदय से लगा कर प्रेमाश्रु बहाने लगी और आशी-र्वाद देने लगी । दाई लसेटा को उस समय अत्यन्त आनन्द हुआ ।

समय पर हम लोग जापान के अपने नगर में पहुँच गए । हम लोगों के मिलाप का विलक्षण समाचार सारे देश में फैल गया । चारों ओर से मेरे पास बधाइयाँ आने लगीं । अनेक बड़े बड़े लोग मेरे पास आ आ कर मेरा विचित्र वृत्तान्त सुनने लगे ।

थोड़े ही दिनों में मेरा विवाह राजकुमारी शिओमा और मणिका के साथ विधिपूर्वक किया गया ।

ईश्वर की कृपा से समय पाकर शिओमा और मणिका को दस

बच्चे पैदा हुए ; जो ईश्वर की कृपा से सब के सब सर्व गुण-सम्पन्न हुए।

मैंने अपनी प्रौढ़ अवस्था में जापान सरकार की बड़ी अच्छी सेवा की और जापान देश की उन्नति के लिए मैंने बड़े बड़े महत्त्व के कार्य किए; जिनका फल यह हुआ कि आज जापान देश उन्नति की चोटी पर चढ़े हुए महा-शक्ति-शाली देशों में गिना जाता है !!!

इस प्रकार एक सौ से भी कुछ अधिक वर्ष तक संसार के सुख दुःख सत्कीर्ति के साथ भोग कर कोई एक सौ वर्षों से हिमालय पर्वत के ऊपर बैठ कर मैं आनन्द-पूर्वक भगवान् के ध्यान में हृदय से निमग्न हूँ।

मेरे ऐसा सुखमय जीवन—सुख दुःख से मिश्रित अद्भुत जीवन—ईश्वर सदा सब को देवे।

श्री राम कृष्ण हरि।

❁ सेठानी परी ❁

—:-०-:—

सुविशाल महा-द्वीप आफ़्रिका के पूर्व में अविसीनिया नाम का एक देश है। सैकड़ों वर्ष की वात है कि अविसीनिया देश के अक्षय नामक नगर में एक सेठ रहता था। उसका नाम वरो था।

वरो के पिता के समय उसका कारोवार वहुत कम था। वरो वड़ा उद्योगी और मिहनती था। उसने अपनी मिहनत और उद्योग से अपने कारोवार को वहुत कुछ वढ़ाया। हज़ारों की जगह उसका कारोवार लाखों का होगया।

वरो को पैसा कमाने की एक ऐसी धुन लग गई थी कि संसार की अन्य आवश्यक वातों पर विचार करने का उसको अवसर ही नहीं मिलता था।

५० वर्ष की अवस्था तक तो वरो ख़ूव मिहनत करके पैसा कमाता रहा। ५० वर्ष की उम्र तक वरो का चाल चलन कैसा था सो किसी को मालूम नहीं।

एक वार वरो एकाएक वीमार पड़ गया। वह ऐसा वीमार पड़ा कि मरते मरते वचा। ५० वर्ष की अवस्था तक वरो ने अपना विवाह नहीं किया था। वीमारी से अच्छा होने के वाद वह वड़े रंज में रहने लगा। वह सोचने लगा "यदि मैं वीमारी से मर गया होता तो मेरे धन दौलत का कौन मालिक होता और मेरे वाद मेरा काम—मेरा नाम चलानेवाला कौन होता?"

वरां का एक पुराना नौकर था। वह बड़ा बुद्धिमान् और ईमानदार आदमी था। उसका नाम हदास था। हदोस का एक लड़का भी था जिसका नाम निदोस था। इनके सिवाय वरो के और भी कई नौकर चाकर थे, जिनमें चिदो और जटो मुख्य थे।

अपने मालिक को बड़े रंज में देख एक दिन बुड्ढा हदोस वरो के पास गया और कहने लगा:—

"आप किस फ़िकर में हैं सो मैं जान गया। इसके पहले मैंने कई बार आप से कहा भी था परन्तु मेरी बातों पर आपने ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। यह सत्य है कि बिना स्त्री के संतान की प्राप्ति नहीं हो सकती और बिना संतान के किसी का वंश चलना असम्भव है। आप का इस तरह दिन रात सोच-विचार में पड़े रहना फ़ज़ूल है। आप अपना विवाह विधिपूर्वक कर लीजिए; शायद ईश्वर की कृपा से आपका मनोरथ पूर्ण हो जाय"।

हदोस की सलाह वरो को पसंद आई। रुपए पैसे की तो कमी थी ही नहीं। उसने बड़े समारोह के साथ सजातीय एक १६ वर्ष की अवस्था वाली युवती से विवाह कर लिया।

वरो की नवविवाहिता स्त्री का नाम परी था। परी सूरत मूरत में बड़ी अच्छी थी।

उन दिनों में अविर्सानिया देश भर की सबसे अधिक रूपवती युवतियों में वह गिनी जाती थी। उसकी चमकीली भड़कीली सूरत गहने पर गहने पहनने से और भी अधिक तेजोमय हो जाती थी। नवयौवना परी की चमक दमक के सामने विचारे ५० वर्ष के वरो की दशा दिन में दिया के समान थी।

परी की चंचलता से वरो की पैसा कमाने की धुन धुल गई। वरो को पैसा कमाने की ज्यादा ज़रूरत भी नहीं थी; क्योंकि उसने पहले ही

लाखों रुपया कमा लिया था। अब अगर वरो को कोई काम था तो वह सिर्फ़ परी को .खुश रखने का काम था।

वरो की अवस्था दिन प्रति दिन ढलने लगी और उसकी स्त्री—परी की अवस्था उसके विरुद्ध थी। परी दिन प्रति दिन प्रौढ़ता को प्राप्त होती जाती थी।

वरो अपनी स्त्री को .खुश रखने के लिए तन मन धन से भरसक कोशिश करता था, परन्तु वह .खुद ही अपने आप को ऐसा समझता था कि उसमें अपनी स्त्री को .खुश रखने की ल्याक़त नहीं है। वह विचारा अपने आप को कोसता था। दिन रात में कई वार उसे अपनी स्त्री की तीखी वातें भी सह लेनी पड़ती थीं !!!

परी की चाल-चलन उसके विवाह के पहले कैसी थी सो तो वरो या उसके नौकर हदोस को भी मालूम नहीं थी, परन्तु जब से वह वरो के घर आई तबसे उसके दुर्गुण या सुगुण के खट्टे मीठे फल पक पक कर टपकने लगे और उनका स्वाद विचारा बुड्ढा वरो चखने लगा और हदोस अफ़सोस के साथ दूर से देखने लगा।

हदोस का जवान लड़का निदोस वरो के घर में विना किसी रोक टोक आना जाना करता था; क्योंकि वह छुटपन ही से घर के लड़के के समान रहता था। परन्तु कुछ दिनों से उसने अपना वहाँ आना जाना बंद कर दिया। निदोस को अपने मालिक के घर न जाते देख उसके पिता हदोस को वड़ा आश्चर्य हुआ। उसने अपने लड़के से इसका कारण पूछा; परन्तु उसे संतोषदायक उत्तर नहीं मिला।

न जाने कौनसी वात को मन में रख कर एक दिन परी अपना मुँह फुला कर एक कोने में वैठ गई। उसके पति वरो ने वहुत कुछ उससे विन्ती मिन्नत की; परन्तु परी का क्रोध वढ़ता ही गया। आखिर वनावटी क्रोध दिखा कर परी ने कहा:—

"तुम्हारे यहाँ के आदमियों से अब मैं तंग आगई। मैं नहीं चाहती कि मेरे घर में ऐसे बेईमान आदमी रहें। यदि तुम मेरी भलाई चाहते हो तो तुम्हारे निगोड़ा निगोम—निघोम (निदोस) को और उसके बाप को एकदम यहाँ से निकाल दो; नहीं तो मेरा जीना कठिन होगा।"

यह सुन कर बरो अकचका गया और उसने बड़ी नम्रता से कहा:—"हदोस और उसका लड़का निदोस तो सब से अच्छे और ईमानदार आदमी हैं; उन्होंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा जो तुम उनको निकलवाना चाहती हो?"

परी—(क्रोध से) क्या ऐसे ही बेईमान आदमियों को तुम ईमानदार समझते हो?

बरो—(नम्रता से) आज तक तो ये बिचारे बड़ी ईमानदारी से मेरे यहाँ रहते आये हैं और निदोस तो अपने लड़के के समान है।

परी—(क्रोध से डपट कर) तुम बक बक करके मेरा सिर-पची मत करो और छिपी बात को मेरे मुँह से मत कहलवाओ।

बरो—अरे! कौन सी छिपी बात है; कहो न?

परी—(अत्यन्त क्रोध दिखा कर और रोती सूरत बना कर) क्या तुम चाहते हो कि निदोस मेरे साथ आँखें लड़ाया करे? मैं क्या तुम्हारे घर में रंडी हो गई हूँ? तुम्हें कुछ शर्म भी है या नहीं?

परी की बातें सुन कर बरो सन्न हो गया! वह कठपुतले के समान चुप हो गया और उसका ख़ून सूख गया!! क्रोध और घृणा के मारे उसका सिर भन्ना गया—उसको चक्कर आने लगे!!!

जब से बरो ने परी से विवाह किया तबसे वह सुख शांति से अपना हाथ धो बैठा। आज उसके सिर पर एक और पहाड़ आ गिरा। खाना पीना उसने छोड़ दिया। संसार उसे प्रत्यक्ष नरक सा प्रतीत

होने लगा। वह सोचने लगा:—"हदोस के समान सच्चा-पक्का और ईमानदार आदमी आज तक मैंने नहीं देखा। उसका लड़का निदोस भी पक्का ईमानदार है। वह मेरे ही लड़के के समान मेरे ही घर में पाला-पोसा गया है और वह परी को बड़े प्रेम और आदर से 'माँ' कहता है। मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि निदोस के निर्दोष हृदय में ऐसी महा घृणित—महा नीच इच्छा पैदा हुई हो।"

वरो ने कुछ सोच विचार कर निदोस को अपने पास बुलवाया और उसके कान में उसने चुपचाप कुछ कह दिया और किसी गांव को जाने के बहाने से दूसरे दिन सवेरे वरो कहीं चला गया।

दूसरे दिन रात को निदोस परी के पास गया और उसके पैर पकड़ कर कहने लगा:—"माता! मुझ दास को क्षमा कर—क्षमा कर"। "तूने क्या किया जो मैं क्षमा करूँ? तू मेरा कहा मान; बस हो गया। फिर देखना तुमको मैं किस तरह फूल के समान रखती हूँ।"

"माता! ईश्वर के लिए ऐसी बातें मुँह में मत ला: तू मेरी माता अन्नदाता हो।"

"अरे निदोस! क्या तुम पागल हो गये हो? 'ईश्वर ईश्वर' बकते हो। जब बुड्ढे हो जाना तब ईश्वर का नाम लेना। अभी तो तुम जवान हो, दुनिया का मज़ा देखना। तुम जानते हो कि तुम्हारा बुड्ढा मालिक आज घर का कल मरघट का। फिर तो अपना ही घर है। मान, मेरा कहा मान।" कहती हुई परी निदोस से लिपट गई।

बुड्ढा वरो जो पास ही एक कमरे में छिपा हुआ था, परी की बातें देख सुन कर मुर्दा हो गया। उसका ख़ून सूख गया। वह पागल सा हो गया!!!

क्रोध से अंधा हो कर वरो एक भारी लठ ले परी पर झपटा।

वरो को देखते ही चालाक परी निदोस से झट अलग हो गई और उलटी निदोस ही को दस पाँच सुनाने लगी !!!

× × × × × × × × × × × × × × × × × × × ×

मान-मर्यादा से जिया हुआ वरो को यह दुर्घटना दुसह हो गई। वह सख्त बीमार पड़ गया। वैद्य दवा-दारू करने लगा। एक दिन दवाई में कोई चीज़ मिला कर दुष्ट पापिनी परी ने वरो को पिला दी; जिसके कुछ ही देर बाद तड़फ तड़फ कर—छटपटा कर महा क्लेश के साथ वरो ने सदा के लिए इस असार संसार का त्याग कर दिया !!!

परी दिखाऊ दुःख दिखाती हुई इधर उधर छटपटाने लगी। अपनी आँखों में ज़रा मिर्ची लगा कर वह आँसू भी बहाने लगी।

धन्य ! इस पापाचार को !!!

पाप हो या पुण्य हो; परी की इच्छा पूर्ण हुई। उसके लिए जो एक दरवाज़ा बन्द था वह अब खुल गया। अब परी का राज सारे संसार में फैल गया !! अब परी चाहे तो एक नहीं पचास निदोस अपने पास रख सकती है !!!

वरो के मरने के थोड़े दिन बाद परी ने निदोस को अपने पास बुलवा भेजा। परन्तु उस समय निदोस का पता नहीं लगा। वह कहाँ चला गया सो किसी को मालूम नहीं हुआ। केवल निदोस का पिता बुड्ढा हदोस, इस संसार के जीवों की विडम्बनाओं पर विचार करता हुआ परी के मकान के सामने एक झोपड़ी में पड़ा हुआ, अपने अख़ीर के दिन गिन रहा था। वह अपनी झोपड़ी में पड़ा पड़ा मृत वरो के घर में क्या क्या होता जाता था सो भी दुःखपूर्ण हृदय और नेत्रों से देखता जाता था।

निदोस की जगह पर कई युवक तैनात किये गए। चिदो और जटो की तनख़्वाह बढ़ा कर तिगुनी कर दी गई। रोज़गार धंधे का ताला

तो वन्द कर दिया गया; परी ने अपने ऐश आराम का धंधा ,खूब चमका दिया।

जिसे अच्छे बुरे का ख़्याल ही न हो, जिसे पाप पुण्य का ज्ञान ही न हो, जिसे लोकलज्जा का विचार ही न हो, जिसे ईश्वर के डर का ध्यान ही न हो, जिसे धन दौलत की कमी न हो, जिसे यौवन-धन की भी कमी न हो, जिसे आकर्पणीय सुन्दरता और "मन-मानी घर-जानी" की स्वतन्त्रता की भी कमी न हो, ऐसी चंचल नारी इस महामद से भरे हुए संसार-समुद्र में क्या क्या न कर दिखावेगी ? उसके लिए सभी कुछ साध्य है !!!

× × × × × × × × × × × × × × × × × × × ×

परन्तु यह सत्य है कि प्रत्येक वात—प्रत्येक विपय में ईश्वर के नियम अटल और अचल हैं। इस संसार पर वड़ी कृपा करके ईश्वर ने हर एक वात के लिए सीमा निर्धारित कर रखी है। सीमोल्लंघन हुए कि मिट्टी में मिल गये।

एक दिन आधी रात के समय एक नया हठीला गठीला जवान आदमी परी के साथ उसी के घर में कुछ वातचीत कर रहा था। इतने में चिदो और जटो वहाँ पहुँच गये। एक नए युवक को परी के साथ देख कर वे दोनों आग वबूला हो गये। वे दोनों उस युवक पर टूट पड़े। .खूब कुश्तमकुश्ती होने लगी। नया युवक अच्छा मज़वूत आदमी था, पर वह अकेला था। वे दो थे। लाचार हो उसने अपने कमर से एक छुरी निकाली और पापी चिदो और जटो के कलेजे में घुसेड़ कर उसने उनको ख़तम कर दिया।

उन तीनों को लड़ने से अलग करने के लिये उस झमेले में परी भी भिड़ गई थी। झटापटी में नये आदमी की छुरी परी की वाईं

आँख में चुभ गई। आँख फूट गई और छुरी के लगने से उसकी नाक भी आधी कट गई !!!

दुष्ट चिदो और जटा को सदा के लिए सुलाकर और परी को कानी नकटी बना कर नया युवक चम्पत हुआ। हो हल्ला मचा। लोग दौड़ आए।

आधी रात के समय परी का सजा हुआ कमरा ख़ूला ख़ून हो रहा है। कमरे के बीच में, ख़ून में तराबोर दो लाशें पड़ी हुई हैं। ख़ून में तर बतर हो परी बेहोश पड़ी हुई है।

उस महा भयंकर दृश्य को देख कर लोग चकरा गए—वे बड़े भयभीत हुए। पोलिस को ख़बर दी गई। परी होश में लाई गई। चतुर परी ने साफ़ कह दिया कि चिदो और जटो लड़ते झगड़ते मेरे कमरे में आए और मुझे घायल करके वे दोनों आपस में लड़ मरे।

पैसे के जोर से कई वैद्य और हकीम लगा कर परी ने अपने घाव बहुत जल्दी अच्छे कराए। परन्तु वह आँख से कानी और नाक से नकटी हो गई थी। उसके लिए कोई दवाई नहीं थी।

"सुन्दरता में मैं लाखों में एक हूँ" समझने वाली गर्वीली परी के गर्व और मद से भरे हुए हृदय में, अपने को अचानक कानी और नकटी हुई देख कर, क्या क्या विचार—क्या क्या भाव उत्पन्न हुए होंगे सो पाठक ही ज़रा ध्यान से देख लें।

अब परी की सूरत में पहले की सी सुन्दरता नहीं है। उसमें वह चंचलता नहीं है। उसकी जवानी जल्दी जल्दी ढल रही है। उसका धन-भंडार भी बहुत कुछ ख़ाली हो चुका है। उसकी एक आँख छुरी के लगने से फूट कर तीन इंच खोपड़ी के भीतर घुस गई है और उसमें से सदा पीब बहती रहती है, जिसको देखने से जी मचलता है। उसकी नाक आधी से भी ज़्यादा कट कर नकटी हो गई है, जो

सदा नदी के समान बहती रहती है ! उसकी कटी हुई नाक और फूटी हुई आँख से सड़ी हुई बदबूदार पीब इतनी बहती रहती है कि उसको पोंछते पोंछते दिन-रात में कई थान कपड़े ख़र्च हो जाते हैं !! उसके घृणित मुँह की ओर अब कोई नहीं देखना चाहता। यदि कोई भूल से भी अचानक उसके विकृत मुँह को देख पाता है तो उसका जी मचलाने लगता और उसे कै होने लगती है !!!

× × × × × × × × × ×

परी में अभी कुछ कुछ मदन मस्त की गर्मी बाक़ी है। रुपया में एक पैसा भर धन की भी थोड़ी सी गर्मी उसमें रह गई है।

कुछ दिनों से परी के पास एक कोई परदेशी आदमी आने जाने लगा है परदेशी रंग रूप और बात चीत में बड़ा सज्जन मालूम होता था। उसके दिल में क्या था सो ख़ुदा जाने।

जब संसार में बाप का भी बाप और गुरु का भी गुरु होता है तब चतुर से भी बढ़ कर कोई चतुर होना ही चाहिए।

एक दिन परी और परदेशी में बड़ी देर तक इस तरह बात चीत होती रही:—

परदेशी—तुम सदा दुःखी रहती हो, यह देख कर मुझे बड़ा रंज होता है।

परी—दुष्टों ने मेरी यह गति कर दी, मैं क्या करूँ।

परदेशी—तुमको ज़्यादा फिकर करने की ज़रूरत नहीं। तुम चाहो तो तुम्हारी आँख और नाक को थोड़े ही दिनों में मैं पहले के समान कर दूँ।

परी—भाई ! यही बात मेरे मन में कई दिनों से आती थी, परन्तु मेरे दुःख को पहचानने वाला कोई नहीं मिला, इसलिए मैं मन मसोस कर रह जाती थी। कृपा करो।

दया करो। मेरी आँख और नाक के सुधर जाने का कोई उपाय हो तो जल्दी करो।

परदेशी—इसमें कौन सी बड़ी बात है। सिर्फ़ १५ दिन में तुम अपने मुँह को ऐने में देख लेना। मगर—

परी—'मगर' क्या ?

परदेशी—यही कि इसके लिए ख़र्चा ज़्यादा पड़ेगा।

परी—कितना ?

परदेशी—आँख की दवाई के लिए दश हज़ार, नाक के लिए दश हज़ार और मेरा मिहनताना दश हज़ार—ऐसा कुल तीस हज़ार रुपया लगेगा।

परी—किसी प्रकार कर धर के मैं पन्द्रह हज़ार रुपया तुमको दे ऊँगी। दया करके दवाई आज ही मुझे देओ।

परदेशी—अच्छा। मुझे तुम्हारी दशा पर दया आती है; पन्द्रह हज़ार ही सही।

परी के पास नगदी तो कुछ बची ही नहीं थी; मगर उसको अपनी आँख नाक दुरुस्त कराना बहुत ज़रूरी थी। घर का माल-मत्ता गहने ज़ेवर—बर्तन भाँडे बेचने पर केवल पाँच ही हज़ार रुपए निकले। रुपए की कमी से परी को बड़ा दुःख हुआ। अब रुपया लावें कहाँ से ?

चतुर परी के ध्यान में एक बात आ गई। वह झट दौड़ती हुई बुड्ढे हदोस के पास पहुँची और वह बड़े ढंग से कहने लगी:—"इस वक्त़ मुझे दस हज़ार रुपए की बड़ी ज़रूरत है। मैं थोड़े ही दिनों में सब रुपया वापस कर दूँगी। इस समय तुम मुझे दश हज़ार रुपया दे दो।"

बुड्ढा हदोस खाट पर पड़ा हुआ था। परी के मुँह को देखते ही

उसकी तबीयत बिगड़ गई। वह .कै करने लगा। परन्तु हदीस बड़ा ईमानदार आदमी था। उसने कहा:—"जो कुछ मेरी कमाई है वह सब तुम्हारे मृत पति के पिता के वक्त की है; मैं, मेरा धन जन सब तुम्हारा ही है। फलानी जगह में दश हज़ार रुपया रक्खा हुआ है सो लेजा।"

परी बड़ी .खुश हुई। उसे किस बात से .खुशी हुई सो जानते हो? उसे इस बात से .खुशी हुई कि अब थोड़े ही दिनों में उसकी नाक और आँख पहले के समान हो जावेगी !!!

सब मिला कर पन्द्रह हज़ार रुपए परदेशी को गिन दिये गए। रुपया लेकर परदेशी ने एक जड़ी परी को दी और कहा:—

परदेशी—कटी नाक को पहले के समान करने के लिए रोज़ तीन बार इस जड़ी को सूँघना चाहिए और बच्चा जनी हुई गधी जब मूतती हो तब उस गधी की मूत्रेन्द्रिय में कटी हुई नाक को लगा देना चाहिए और मूत्र को .खूब सूँघना चाहिए जिसमें कुछ मूत्र भी नाक के भीतर जाय।

× × × × × × × × × × × × × × × × × ×

परी—तब तो एक गधी भी मिलानी पड़ेगी?

परदेशी—हाँ। ज़रूर।

परी—नाक कितने दिन में पूरी बढ़ जावेगी?

परदेशी—सिर्फ़ १५ दिन में।

परी—आँख के लिए कैसा करना होगा?

परदेशी—तुम कैसी आँख चाहती हो—छोटी या बड़ी?

परी—मेरी आँख जैसी पहले थी वैसी ही।

परदेशी—तब तो फिर .ज्यादा तकलीफ़ उठाने की .जरूरत नहीं। तुम सिर्फ़ इस जड़ी को काली बिल्ली की लेंड़ी के साथ

घिस कर फूटी आँख में लगा लिया करना और रोज़ शाम सवेरे एक तोला भर सफ़ेद कुत्ती की लेंड़ी गोली बना कर पानी के साथ निगल जाया करना।

परी—तब एक बिल्ली और कुत्ती भी मिलानी पड़ेगी ?

परदेशी—हाँ। सबसे पहले सब ठीक ठाक करके तब दवाई का इस्तेमाल शुरू करना चाहिए। मगर इसमें और भी एक बात है।

परी—वह क्या ?

परदेशी—वह यही कि अगर तुम जैसा मैंने बताया वैसा न करोगी, .जरा भी भूल करोगी और पथ्य ठीक ठीक न रखोगी तो तुम्हारी नाक इतनी बढ़ जावेगी कि वह हाथी की सूँड़ को भी मात करेगी और तुम हिन्दुओं के गणेश जी की पूरी अर्धांगिनी बन जाओगी। और तुम्हारी आँख इतनी बढ़ जावेगी कि तुम मृगनयनी के बदले मृग-सींगनी हो जाओगी। इसलिए मैं तुम्हें पहले ही बताए देता हूँ कि तुम दवाई का इस्तेमाल .खूब ख़बरदारी से करना।

परी—जैसा तुम बताए हो, ठीक वैसाही मैं करूँगी। पथ्यापथ्य क्या सो भी बताओ।

परदेशी—इसमें पथ्य का कुछ अधिक विचार नहीं। पर हाँ, इसमें सिर्फ़ एक बात यही है कि जो स्त्री पतिव्रता होगी, जो स्त्री तीनों कालों में (भूत, भविष्यत्, वर्त-मान) पर-पुरुष का स्वप्न में भी विचार न करती होगी, उसको यह दवाई बहुत जल्दी असर करती है।

परी—(मन ही मन) यह तो बड़ा बुरा हुआ। मैं तो समुद्र

में जितने वालु-कण हैं उनसे भी अधिक पाप-कर्म कर चुकी और कर रही हूँ ।

परदेशी—(परी के दिल की वात जान कर) "ईश्वर चाहेगा तो तुमको इससे फ़ायदा ही होगा और अगर फ़ायदा न भी हुआ तो नुक़सान भी न होगा । १५ दिन तक तुम औषध विधि-पूर्वक सेवन करना ।" कहते हुए परदेशी ने अपने देश का रास्ता लिया ।

परी को तो अपनी आँख और नाक जैसा वने वैसा ठीक करना ही था । यही उसकी प्रवल इच्छा थी । उसने एक वच्चे वाली गधी, एक काली विल्ली और एक सफ़ेद कुतिया ख़रीद ली ।

सव सामान ठीक ठाक होने पर एक दिन परी ने उस जड़ी को विल्ली की लेंड़ी के साथ घिस कर अपनी फूटी आँख में लगाई । सफ़ेद कुतिया की लेंड़ी की एक तोला भर की गोली वना कर पानी के साथ वह निगल गई ; और परी उस जड़ी को सूँघती हुई गधी के पीछे गई । गधी ज्यों ही मूतने लगी त्यों ही उसने अपनी कटी हुई नाक उसकी मूत्रेन्द्रि में जमा दी— जमाते ही गधी ने जो दुलत्ती झाड़ दी कि परी के वत्तीसों दाँत झड़ गए और उसकी एक आँख जो वची हुई थी वह भी फूट कर दो इंच भीतर धस गई !!!

× × × × × × × × ×

अव परी पहले की परी न रही । उसकी चंचलता लोप हो गई । उसका स्वर्ण-भंडार और यौवन-भंडार सभी लुट गए । सव से भारी और ख़राव वात तो यह हुई कि परी के कमल के समान गंभीर नेत्र फूट कर खोपड़ी के अन्दर दो दो इंच धस गए । उसकी सुडौल नाक कट सड़ कर एक चौथाई ही रह गई और उसकी आँखों और नाक से ऐसी वुरी सड़ी हुई पीप निकली थी कि × × !!!

परी की घोर दुर्दशा देख ईमानदार नदोस और निर्दोष निदोस को दया आई। वे उसको अपने घर में ले गए और उसका पति सेठ वरो की लिहाज़ से उसकी अच्छी सेवा करने लगे। परन्तु जिस पर ईश्वर ही नाराज़ हो उसको कोई मनुष्य क्या सुख पहुँचा सकता है ?

कुछ दिन बाद परी को कुष्ट रोग भी लग गया; जिससे उसका सारा बदन सड़ने—गलने लग गया !!!

एक दिन तीन बजे रात को, जब सब लोग सो रहे थे, परी अपने बिस्तर से उठी और एक लकड़ी के सहारे बाहर निकली। वह दोनों आँखों से अंधी तो थी ही, रास्ता भूल कर बहुत दूर निकल गई और चलती चलती एक गहरे गड्ढे में सिर के बल उल्टी गिर पड़ी। गड्ढे में गिरते ही उसकी कमर टूट गई। वह गड्ढा बस्ती का मैला फेंकने के लिए एक सौ फुट गहरा सफ़ाई वालों के द्वारा खोदा गया था। सवेरा होते ही मेहतर लोग उस गड्ढे में धड़ा धड़ मैला फेंकने लगे। उस समय तक परी मरी नहीं थी—वह उस मैले के गड्ढे के अन्दर तड़फ रही थी और मैला उस पर फेंका जा रहा था। × × !!!

"जो जस करे सो तस फल पावे।
करे धरे सो आगे आवे" ॥

—:-०-:—

नूर ।

बादशाही मुसलमान ज़माने में दिल्ली में दौलतखां नाम का एक धनी सेठ रहता था। सेठ दौलतखां का नाम उसके धन दौलत और इज्ज़त के कारण बहुत दूर तक फैला हुआ था। बादशाह सलामत ख़ुद सेठ जी की बड़ी इज्ज़त करते थे। ईश्वर की कृपा से सेठ जी के घर में ऐसी किसी बात की कमी नहीं थी; परन्तु बहुत दुख के साथ कहना पड़ता है कि एक बहुत बड़ी बात की कमी ज़रूर थी। वह यह थी कि सेठ जी के लड़के बच्चे नहीं थे और सेठ जी की उमर ढल रही थी। सेठ जी ने पीर पैग़म्बरों को बहुत कुछ मिन्नतें कीं और उन्हों ने ग़रीब गुरुवों को बहुत कुछ खिलाया पिलाया, मगर कुछ फ़ायदा न हुआ।

(२)

उन दिनों में दिल्ली में एक बड़ा विद्वान् मौलवी रहता था। मौलवी संस्कृत, अर्बी, फ़ार्सी वगैरः ख़ूब जानता था, मगर "पढ़े फ़ार्सी बेचे तेल; ये देखो क़िस्मत का खेल,, के अनुसार वह बिलकुल ग़रीब था। उसकी एक बीबी और दो बच्चे थे। एक लड़की और एक लड़का। लड़की का नाम नूर था और लड़के का पीरखां। नूर पीर रंग-रूप में एक से थे। नूर के कपड़े पीर को और पीर के कपड़े नूर को पहिना देने से उन दोनों को कोई पहिचान नहीं सकता था।

मौलवी ने अपने बच्चों को संस्कृत, अर्बी, फ़ार्सी में ख़ूब अच्छी शिक्षा दी थी। जिससे नूर और पीर ग़रीब होने पर भी पवित्र और भारी दिल वाले थे।

नूर की सुन्दरता और उसकी सूरत मूरत के बाबत इतना ही कहना

चस होगा कि उसकी मोहनी मूरत पर सारे शहर के अमीर उमरा और नवाब लोग हैरान परेशान थे। कई एकों ने तो नूर के पास पैगाम तक भेजना शुरू कर दिए थे। मगर नूर ऐसी वैसी रमणी नहीं थी। संस्कृत, अर्बी, फ़ार्सी के अनेक उत्तम उत्तम ग्रंथों का उसने मथन कर डाला था। उसका हृदय पवित्रता से भरा हुआ समुद्र के समान गंभीर था। वह जानती थी कि लखपती और करोड़पती अमीर उमरा और नवाब लोग इस संसार में कोई चीज़ नहीं। और वह यह भी अच्छी तरह जानती थी कि पुरुष वही है जो अनेक सुगुणों और विद्याओं से विभूपित हो। और मर्द वही है जो मैदाने जंग में वहादुरी दिखाने में अपना सानी न रखता हो। इस लिए नूर उन नवाब अमीरों की ओछी वातों पर ध्यान ही नहीं देती थी; वल्कि वह कभी कभी पैगाम लाने वालों को अच्छी तरह फटकार की झाड़ दे दिया करती थी।

(३)

कोई एक साल से नूर के पिता के यहाँ संस्कृत पढ़ने के लिए शाही फ़ौज का एक सिपाही रोज़ आया करता है और बड़े शौक़ से संस्कृत सीखता है। वह फ़ार्सी अच्छी जानता है। वहादुरी में भी उसका नाम ख़ूब फैला हुआ है। वह अच्छा ऊंचा पूरा जवान है। उसकी उमर क़रीब २० वाईस साल की है। उसका चिहरा सुडौल और गंभोर है, और वह होनहार दिखता है। वह पाक़ साफ़ और भारी दिलवाला है। नाम उसका शेर है। यही शेर लोगों के अनुमान के अनुसार नूर के पवित्र हृदय में जगह पाया हुआ है। लोग चाहे जैसा अनुमान करें; जो पवित्र है वह सदा पवित्र ही है। हाँ, एक दिन की वात है कि शेर उस दिन संस्कृत पढ़ने नूर के घर पर नहीं गया था; तब नूर ने अपने वाप से पूछा था "क्यों वावा! आज शेर संस्कृत पढ़ने नहीं आया"।

(४)

नूर की सुन्दरता उसकी विद्वत्ता और उसके उत्तम विचारों की ख़बर बादशाह सलामत तक पहुँची और नूर को पाने के लिए शहर के नवाब, अमीर लोग किस किस तरह की कोशिशें कर रहे थे सो सब बादशाह को राय रत्ती मालूम हुई। बादशाह अपने दिल में सोचने लगे कि ये नवाब लोग शराब कवाब उड़ाने और नाचरंग में दिन रात विताने के सिवा और किसी काम के नहीं। ऐसे निकम्मे आदमियों को चाहे ये नवाब ही क्यों न हो, नूर के समान समझदार लड़की कभी नहीं चाहेगी।

ऐसी ही बातें सोच कर बादशाह ने एक दिन नूर को अपने पास बुलवाया। बादशाह बेगमों के साथ बैठकर नूर से इस तरह बातें करने लगे:—

बादशाह:—क्यों नूर ! मैं तो तुम्हारा सब हाल सुन चुका।

नूर:—भला हम ग़रीब प्रजा की खबर हुज़ूर न रक्खेंगे तो और कौन रक्खेंगे।

बादशाह:—क्या हमारी फौज़ से कोई जवान आदमी तुम्हारे वालिद के पास संस्कृत पढ़ने आया करता है ?

नूर:—जी हुज़ूर ; आता तो है।

बादशाह:—उसका नाम तुम जानती हो।

नूर:—हां हुज़ूर ; जानती हूँ।

एक बेगम:—हँस कर; क्यों नूर ! क्या शेर से कभी तुम्हारी चार आँखे भी हुई थीं ?

बादशाह:—उसका नाम शेरख़ाँ है। वह ग़रीब है मगर बड़ा बहादुर सिपाही है। उसी की बहादुरी की बदौलत गए साल की लड़ाई में मेरी जीत हुई थी। उस पर मेरा बहुत ख़्याल है! और मैं बहुत

उन्हें उसे तरक्क़ी दूंगा। मगर तुम से मेरी एक अर्ज़ है। अगर मंज़ूर करना चाहो तो अर्ज़ी पेश करूँ।

नूर:—(अदब के साथ झुककर सलाम करके)—गरीबपरवर! मैं कौन सी चीज हूँ, जो हुज़ूर की अर्ज़ी लूं और मंज़ूर करूँ।

बादशाह:—तुम्हारी तमाम बातें और तुम्हारे अच्छे और भारी ख़्यालात सुनकर मुझे निहायत ख़ुशी हुई। तो, मेरी अर्ज़ी तुमसे यही है कि तुम्हारी शादी मैं फलानी तारीख़ को शेर के साथ करदूँ और उसी तारीख़ से फ़ौज में उसका ओहदा बढ़ा दूँ और तनख़्वाह में भी उसे तरक्क़ी दूँ।

नूर:—(चुप चाप मुँह नीचे करके मनही मन कहने लगी) "जिसके लिये मेरा मन कभी कभी चलायमान होता था आज ईश्वर ने मुझको उसी के हवाले कर दिया" वक्त पर नूर की शादी शेर के साथ हो गई। पहिले ही दिन नूर और शेर में शर्तों के साथ इस तरह बात चीत हुई—

शेर:—अगर मैं किसी लड़ाई में मारा जाऊँगा तो तुम उस वक्त क्या करोगी—?

नूर:—ऐसी ख़बर पाकर इत्मिनान होने पर मैं भी उसी वक्त मर जाऊँगी। इसके बाद नूर और शेर बड़े आनंद से रहने लगे।

(५)

सेठ दौलतखाँ की उमर दिन ब दिन बराबर ढलने लगी मगर उसके दिल की मुराद पूरी नहीं हुई।

लड़का तो लड़का लड़की भी नहीं हुई।

सेठ जीने कुछ सोचकर हज्ज कर आने की ठानी। उन दिनों में मक्के-मदीने तक जाकर सही सलामत लौट आना बड़ा कठिन काम था। मक्का जाने की सब तैयारियाँ करके सेठ दौलतखाँ ने अपनी जान-

माल की हिफ़ाज़त के लिए कुछ सिपाहियों के लिए बादशाह से अर्ज़ की। बादशाह ने उसकी अर्ज़ी मंज़ूर करके बारह सिपाही और उन पर शेरख़ाँ को हवलदार तैनात करके सेठजी के हवाले किया। बड़े ठाठ बाट और साज बाज के साथ सेठजी मक्के के लिए रवाना हुए। जङ्गल पहाड़ों के रास्ते से होते हुए सैकड़ों मील तै करने के बाद एक दिन घोर जङ्गल के बीच सेठजी का केम्प लगा हुआ था। आधी रात के वक्त कोई पाँच सौ लुटेरों ने सेठजी के केम्प को घेर लिया। सेठजी के सिपाहियों और लुटेरों के दर्मियान में खासी एक लड़ाई हुई। शेरख़ाँ और उसके आदमियों ने बहुत कुछ बहादुरी दिखलाई। मगर आख़िर लुटेरों ही की जीत हुई। लुटेरों ने कुल माल मत्ता लूट लिया और उन्होंने सेठजी और उनके तमाम आदमियों को पकड़ कर अपने पहाड़ी खोहों में ले जाकर उन सब को गुलाम बनाकर रक्खे।

(६)

सेठजी के वापस दिल्ली आने की तारीख़ पूरी होकर एक महीना हुआ; इसी तरह दो और तीन माह भी निकल गए; पर सेठजी का पता ही नहीं। कोई ख़बर भी नहीं। सेठजी की खोज में आदमी पर आदमी भेजे गए, पर कुछ पता न लगा। बादशाह सलामत ख़ुद सेठजी के लिए फ़िक्र करने लगे। मगर वे क्या कर सकते थे। वह ज़माना ही वैसा था।

कुल बातें विचारी नूर को मालूम हुईं। उसे यह भी मालूम हुआ कि उसका पति शेरख़ाँ भी सेठजी के साथ ला पता है। विचारी अपने प्यारे पति के लिए दिन रात आँसू बहा कर कटी घास के समान दिन दिन सूखने लगी। वह अपने कौल के मुताबिक मर जाती; मगर उसको यह इत्मिनान नहीं हुआ था कि उसका पति शेर मर गया या जिन्दा है। नूर को यह बड़ी फ़िकर लगी कि उसके पति का सच्चा हाल

उसे कैसे मिले । नूर ने कई वार अपने कौल के मुताविक मर जाने का विचार किया, मगर वह फिर यह सोच कर चुप रही कि यदि मैं अभी मर जाऊँगी और मेरा पति पीछे जीता जागता आ जायगा तो वह भी मेरे लिए अपने कौल के मुताविक मर जायगा । इस तरह हम दोनो इस दिखती दुखती दुनिया से सदा के लिए चल बसेंगे ।

नूर इसी तरह नाना प्रकार की वाते सोचा करती और दिन रात रोती रहती थी ।

(७)

एक दिन नूर के ध्यान मे एक वात आई । उसने अपने छोटे भाई पीरखा को अपने पास एकात मे बुलवाया । दोनो भाई वहन मे इस तरह वात चीत होने लगी—

नूर —(आखो से आसू वहाती हुई) देखो भैया ! आज मैं मर जाऊँगी ।

पीर —क्यो ?

नूर —क्यो क्या है ? क्या तुम नही जानते कि शेर का पता नही है ?

पीर —तो क्या हुआ । तुम्हारा निकाह दूसरी के साथ कर दिया जावेगा ।

नूर —नही भैया, ऐसा नही हो सकता ।

पीर —वाह अपन हिन्दू थोड ही हैं, जो तुम सती होना चाहती हो ।

नूर —देखो भैया ? पाक साफ दिल वालो के लिए हिन्दू या मुसलमान धर्म की जरूरत नही है । जिसका दिल सच्चा, पक्का और साफ है वह एक वार जिधर झुकता है, अत तक उधर ही झुका रहता है । शुरू ही मे हम दोनो मे यह कौल हो चुका है कि हम दो मे से जव

एक मर जाय तो उसी वक्त दूसरे को भी मर जाना चाहिए। मैं अपने इस कौल को कभी खाली नहीं होने दूँगी। इस लिए आज मेरा मरना निश्चय है।

पीरखां:—(रोता हुआ) तब तो बहिन, मैं भी तुम्हारे साथ मर जाऊँगा।

नूर:—(अपने भाई को गले लगा कर रोती हुई) अपन दोनों मर जावेंगे तो अपने बूढ़े मां बाप के लिये कौन रहेगा? इस बुढ़ापे में उनके खाने कपड़े का इंतिज़ाम कौन करेगा। मगर एक बात है, यदि तुम मानो तो मैं बताऊँ।

पीरखां:—यदि तुम्हारे मरने की बात न हो और कोई बुरी बात न हो तो मैं तुम्हारी बात मानने के लिए तैयार हूँ।

नूर:—तुम किसी से कहोगे तो नहीं।

पीर:—नहीं, कहीं।

नूर:—देख भैया! तू जानता है कि तेरा मेरा रूप एकसा है यदि अपन एक दूसरे के कपड़े बदल कर पहिन लें तो कोई पहिचान ही नहीं सकता।

पीर:—ठीक। तो?

नूर:—मैं तेरे भेष में बाहर जाकर अपने पति की खोज करना चाहती हूँ, क्योंकि अभी तक अपने को यह नहीं मालूम हुआ कि शेर और सेठजी कहाँ हैं और अभी वे क्या हो गए?

पीर:—तब इसमें मुझे क्या करना होगा?

नूर:—कुछ नहीं। तुम अभी मेरे कपड़े और गहने पहिन लो और मैं तुम्हारे कपड़े पहिन लेती हूँ और तुम अब से अपना नाम नूर रक्खो और मैं अपने को पीरखाँ कहूँगी। तू जब मुझे पुकारना तो भाई पीरखाँ कह कर पुकारना और मैं तुमको बहिन नूर कह कर पुकारूँगी।

पीर:—तब फिर ?

नूर:—तब फिर मैं तुम्हारे नाम से नौकरी की तलाश में यहां से निकल जाऊँगी; मगर यह हाल तुम किसी से कभी न कहना।

पीर:—अच्छा न कहूँगा। मगर तुम फिर कब तक वापस आओगी ?

नूर:—जहां तक हो सकेगा बहुत जल्द आऊँगी। तू मेरे लिये ज़रा भी फ़िक्र न करना।

पीर:—(फूट फूट कर रोता हुआ) मगर बहिन देख। तू कहीं जाकर मर जायगी तो मैं भी मर जाऊँगा; और अगर वापस आने में भी ज़्यादा देरी लगायगी तो भी मैं अपने प्राण खो बैठूँगा।

नूर:—(अपने भाई को गले लगाकर रोती हुई) भैया ! ऐसा कभी न करना। ज़्यादा से ज़्यादा एक साल तक मेरी राह देखना। मैं बिना तुमको देखे कभी न मरूँगी।

इस तरह बातें करते हुए दोनों भाई बहिन गले लग कर बहुत ही प्रेम से रोये। सब बातें तय होने पर दोनों ने एक दूसरे के कपड़े वगैर: बदल कर पहिन लिए। तब नूर ने अपने प्यारे भैया से कहा। "देख भैया ! अब अपने को कोई पहिचान तो लेः। पीरखां ने जवाब दिया—"हां बहिन, दरअसल अपने को देख कर कोई यह नहीं कह सकता कि नूर कौन और पीर कौन"।

नूर और पीर की ये बातें सुनकर एक छोटी सी लड़की जो सदा नूर के साथ खेला करती थी और जो उस समय नूर पीर के पास खड़ी खड़ी तमाशा देख रही थी। झट दौड़ कर कहने लगी "मैं बहिन नूर को और भैया पीरखां को तो 'पछान' सकती हूँ"। तब पीर ने कहा कि अच्छा बता मैं कौन हूँ ?" "तुम मेरी बहिन नूर हो" कह कर वह लड़की पीरखां की गोद में जा बैठी !!

उस लड़की को देखते देखते पहिचानने में ग़ल्ती करती देख कर दोनों भाई बहिन कुछ देर तक हँसते रहे। दूसरे दिन नूर पीर के नाम से नौकरी की तलाश में जाने के बहाने से अपने मां-बाप से इज़ाजत लेकर घर से निकल पड़ी।

(८)

नूर पुरुप के भेप में बड़ी ही अच्छी लगती थी। उसे जो कोई देखता वह यही कहता था कि वाह! अगर ख़ुदा किसी को ख़ूबसूरती दे तो ऐसी दे। नूर पुरुप के भेप में अपने पति की खोज में बड़े बड़े जंगलों, पहाड़ों के रास्तों को तै करती हुई चलती रही। एक दिन रास्ते में नूर को बड़ी हैरानी उठानी पड़ी और तोबा करना पड़ा। बात यह थी कि नाज़ुक बदन वाली नूर कई दिन तक पैदल चलती चलती थक कर रास्ते के पास के एक झरने के समीप झाड़ के नीचे लेटी हुई थी। इतने में एक अहीर अपनी नव जवान औरत को लिए हुए वहाँ पहुँचा। उस नूर को पुरुप के भेप में (पीरखाँ को) देख कर ऐसी मोहित हो गई कि वह उसी वक़्त अपने पति से पेट में बहुत भारी दर्द होने का बहाना करने लगी और वह वहीं लेट गई। अहीर ने समझा कि पेट में दर्द ज़रूर होगा। यही समझ कर वह पास के एक गाँव से वैद्य लाने के लिए गया। उसके कुछ दूर जाते ही उसकी नव-जवान औरत झट उठी और नूर के पास जाकर बड़ी नज़ाकत के साथ अपनी इच्छा ज़ाहिर करने लगी। तब नूर बड़े हैरान में पड़ी।

नूरः—तू तो अभी पेट के दर्द से मरी जारही थी। और अब यह क्या कह रही हो? तेरा पति विचारा तेरे लिए वैद्य लाने गाँव को दौड़ता गया है।

अहीरिन—(अत्यन्त विह्वलता के साथ) ये सब आडम्बर तुम्हारे लिए ही किए गये हैं।

नूर:—भाई ! मैं तो एक मुसलमान फ़क़ीर हूँ और मक्के शरीफ़ जारहा हूँ. मेरे से ऐसा काम नहीं हो सकता !!

इतना सुनते ही कामान्ध अहीरिन नूर पर टूट पड़ी और क्या जाने क्या क्या करने लगी। बहुत कुछ गड़बड़ के बाद अहीरिन को मालूम हुआ कि नूर पीरखां नहीं है !!

(६)

नूर कई दिन तक चलती चलती एक शहर में पहुँची। वहाँ एक नवाब था। जिसका नाम खां था। उसके जौहर नाम की एक लड़की थी, जो बहुत सुन्दरी थी। वह अपने आप को ऐसा समझती थी कि मेरे बराबर दुनियाँ में सुन्दरी स्त्री सिवाय मेरे दूसरी नहीं है। बात यह थी कि दर असल वह बड़ी ही ख़ूबसूरत थी और उसका क़ौल यह था कि मेरे से अधिक या मेरे बराबर जो शख़्स ख़ूबसूरत होगा उसी से मैं शादी करूँगी। इसी सबब से कई लोगों की तज़वीज़ की गई, मगर किसी से उसने शादी न की। जिसके सबब उसका पिता खां बहुत अफ़सोस में रहता था।

अचानक ऐसा हुआ कि नूर पीरखां के भेष में एक तालाब के किनारे खड़ी हुई थी, वहीं से जौहर की सवारी निकली। उस वक़्त नूर की ख़ूबसूरती पर हैरान हो कर जौहर के होश उड़ गए।

जौहर ने अपने मन में ठान लिया कि कुछ भी हो, इसी ख़ूबसूरत जवान के साथ शादी करना चाहिए—यही मेरे लायक़ है। हवाख़ोरी से घर आकर जौहर ने अपने बूढ़े बाप से अपना मतलब ज़ाहिर किया।

बिचारे बूढ़े खाँ की एक ही लड़की थी। उसका और कोई लड़का बचा नहीं था ; इसलिए वह अपनी लड़की जौहर को दिल से प्यार करता था और उसके दिल के माफ़िक़ काम करता था।

अपनी प्यारी लड़की की इच्छा के अनुसार बूढ़े खाँ ने उस नव-जवान परदेशी आदमी (नूर) को अपने दरबार में बड़ी इज्ज़त के साथ बुलवा या और अपने नज़दीक बैठा कर अपना वा अपनी लड़की का मतलब उससे ज़ाहिर किया ।

बूढ़े खाँ साहव की बातें सुन कर नूर एकदम सहम गई—वह कुछ कुछ डर भी गई । वह अपने मन में कहने लगी—"मेरे रूप पर मोहित हो कर अपने पति को ठगने वाली कामांध अहीरिन से तो मैंने किसी तरह छुटकारा पाया परन्तु इस समय इस रूप और सुन्दरता की भूखी जौहर के पंजे से बचना कठिन है ।

नाम, गाँव और धाम पूछने के वाद बुड्ढा खाँ कहने लगा:—

"देखो जी पीरखां सिवाय जौहर के मेरा कोई नहीं है, मैं चाहता हूँ कि अपनी लड़की की शादी तुम्हारे साथ करके अपना कुल धन दौलत और राजपाट तुम को सौंप कर फ़रागत हो जाऊँ । तुम हर तरह मेरी लड़की वो मेरी नवावी के लायक़ दिखते हो और जौहर भी तुमको दिल से चाहती है। अब तुमको चाहिए कि हमारी बात मान लो।

इन बातों को सुन कर नूर के होश उड़ गए । उसका दिल उस वक़्त ऐसा हो गया था कि मानो वह घोर अंधकार में पड़ी हो । क्या जवाव देना क्या नहीं देना सो उसको कुछ नहीं सूझता था । मगर नूर ख़ूब पढ़ी लिखी और चतुर थी । ख़ूब सोच समझ कर उसने नवाव को जवाव दिया:—

"जैसी हुज़ूर की मर्ज़ी । मगर मक्के शरीफ़ हो आना मुझे निहायत ज़रूरी है" ।

"कोई हर्ज नहीं; वाद शादी के तुम जौहर से इस वावत तै करके हज्ज कर आ सकते हो ।"

मतलब ये है कि वहुत कुछ झंझट के वाद जौहर के साथ पीरखाँ

(नूर !!!) की शादी हो गई। मगर चतुर नूर ने पहले ही यह बात तै करा ली थी कि जब तक वह हज्ज कर न आवे तब तक जोहर के साथ उस का कोई सम्बन्ध नही हो सकता। इसी ठहराव के मुताबिक नूर अपने काम पर फिर रवाना हुई।

(१०)

कई दिन घने से घने जगलो को तै करने के बाद एक भारी पहाड के खोह मे लम्बी लम्बी सफेद दाढी वाला एक फकीर नूर को मिला। नूर को पुरुष के भेष मे देख कर उसने कहा कि तुम पीरखा नही हो बल्कि नूर हो।

फ़कीर की बाते सुन कर नूर को बडा अचरज हुआ। वह कुछ डर भी गई। कुछ सोच कर चतुर नूर फकीर के पैरो पर गिर कर कहने लगी —

"बाबा मुझ दुखी अभागिनी पर दया कर और मुझ दुवा दे कि मैं किसी तरह अपना काम करके जीती जागती घर पहुँच जाऊँ।" फकीर पूरा पहुँचा हुआ था। उसको नूर की दशा पर दया आई और उसने कहा —"बेटी नूर! तू घबरा मत। तेरा काम पूरा होगा। मे वर्षो से यहा इस गरज से बैठा हुआ हूँ कि कोई यहा मेरे पास आवे तो मै उसको उन बदमाश लुटेरो का पता बतलाऊँ और उनको पकडने का उपाय भी बता दूँ। आज तू मेरे पास आई हो और तू ही इस काम के लायक हो। वे डाकू यहा से सिर्फ बीस मील पर हैं। तू फकीर के भेप मे फलाना फलाना रास्ता हो कर जाना और अपने साथ यह जडी ले जाना। जिस वक्त उन डाकुओ को पकडना हो उस वक्त इस जडी को जरा हवा मे रख देना, उसी वक्त डाकू बेहोश हो जावेगे। तू उस वक्त अपनी नाक बद कर लेना। और एक दूसरी जडी है, किसी बे होश आदमी को इसे सुँघा देने से वह होश मे आ जाता है।"

दोनों जड़ियाँ ले कर नूर ख़ुशी ख़ुशी फ़क़ीर के यहाँ से रवाना हुई।

फ़क़ीर के बताए हुए रास्ते से जल्दी जल्दी चल कर दूसरे दिन नूर उन डाकुओं के अड्डे पर पहुँच गई और वह पुरुष के भेष में उन से कहने लगी—"बाबा ! मैं फ़क़ीर हूँ और मक्के शरीफ़ को जाना चाहता हूँ । अगर आप लोग दया करके मुझे मक्के शरीफ़ का रास्ता बता देवेंगे तो मैं आप लोगों का बड़ा अहसान मानूँगा ।

दुष्ट डाकुओं ने सूखा जवाब दिया:—"चाहे तुम फ़क़ीर हो या लकीर हो, अब तुम यहाँ से नहीं जा सकते और तुमको ताज़िन्दगी हमारी ग़ुलामी करनी होगी"।

फ़क़ीर की मेहरबानी से नूर के लिए सब बातें ठीक ही थीं; इस लिए उसे कोई फ़िकर नहीं था ।

जिस दिन नूर डाकुओं के अड्डे पर पहुँची, उसी दिन वह क्या देखती है कि सेठ दौलतख़ाँ से नूर का पति शेरख़ाँ से और उनके साथियों से डाकू लोग बड़ी निर्दयता से ठोक पीट कर नीचे लिखे काम ले रहे हैं:—

(१) पहाड़ों के खोहों में चार पाँच सौ गज़ नीचे उतरना और उतना ही ऊपर चढ़ कर दिन भर पानी ढोना ।

(२) खाना तैयार करके सात आठ सौ डाकुओं को शाम सबेरे खिलाना पिलाना ।

(३) सबको नहलाना धुलाना और उन सब के कपड़े भी धोना ।

(४) सोते वक़्त पैर दाबना और मैला भी उठाना !!!

(५) अगर किसी ग़ुलाम ने किसी डाकू के काम में ज़रा भी चूं चपड़ किया कि बस चार लातें उसे मिलीं !!!

देखिए पाठक ! दुष्टों की दुष्टता !! तभी कहते हैं कि "दुष्ट तजे नहिं दुष्टपने को ।"

बिचारा बुड्ढा सेठ दौलतखां जिसने कभी अपने हाथ से गिरी लकड़ी भी नहीं उठाई थी और जिसके इशारे में सैकड़ों नौकर ...रहते थे, उन डाकुओं की सख़्त ग़ुलामी करते करते मरियल होगया ...!!! वह दिन रात रोता हुआ यही कहता था कि इस वक़्त, अगर ...ई मुझे इस खूंख्वार दोज़ख से निकाल ले जाता तो मैं अपना करोड़ों धन-दौलत उसी को देदेता।

...बेटी वग़ैरः की सख़्त बुरी हालत को देख कर नूर का स्वर्गीय प... और कोमल हृदय एकाएक पिघल कर पानी पानी हो गया। उसकी आंखों से आंसू की धारा बहने लगी; परन्तु उसने अपना दिल ...कठोर कड़ा करके अपना दुःख ज़ाहिर नहीं होने दिया।

...ा दिन शाम को नूर (फ़कीर के भेष में) ने डाकुओं के मु...खिया से कहा "मैं पहुँचा हुआ फ़कीर हूँ; मैं कई क़िस्म के अजीब व ग़रीब तमाशे जानता हूँ। अगर आप लोग देखना चाहें तो सब लोग ...मा हो जाओ।"

...ये लुटेरे डाकू उजड्ड जङ्गली मूर्ख तो थे ही, झट फ़कीर (नूर) की बातों में आगए और तमाम डाकुओं ने बाल-बच्चे समेत फ़कीर को चारों ओर से घेर लिया। ठीक मौक़ा देख कर नूरने तमाशा बताने के बहाने से अपनी नाक बंद करके फ़कीर की दी हुई उस जड़ी को हवा में रख दि...। ज़रा ही देर में सबके सब डाकू बेहोश होकर ज़मीन पर गिर ग...।

...डाकुओं के साथ ही साथ सेठ दौलतख़ाँ और उसके साथी भी बेहोश हो गए थे; इसलिए नूर, दूसरी जड़ी को जो फ़कीर ने दी थी, उन लोगों को सुँघा कर होश में लाई।

सेठ दौलतखां और शेरखां वग़ैरः होश में आते ही क्या देखते हैं कि तमाम डाकू मुर्दों के समान ज़मीन पर पड़े हुए हैं !!!

यह सब फ़क़ीर ही की करतूत समझ कर सबके सब जाकर के पैर पड़ने लगे। तब नूर (फ़क़ीर के भेष में) ने बड़ी चतुराई से कहा:—

"देखो भाई ! तुम लोग ऐसा मत करो; मैं ख़ुद तुम के पैर पड़ने के लिए तैयार हूँ; क्योंकि मैंने जो किया अपने बादशाह के हुक्म की तामीली में किया—और हर शख़्श को चाहिए कि अपने बादशाह के लिए अपना दिल, माल क़ुर्बान कर देवे।"

यह सुन कर—

सेठ दौलतख़ाँ ने कहा—भाई ! तुम्हारा ख़ुदा भला करे और दें। तुमने बादशाह सलामत के लिए तो कुछ नहीं किया हम लोगों को भारी—बहुत भारी मुसीबत से बचाया। अफ़सोस—सद: सफ़सोस कि यहाँ पर हम कुछ नहीं दे सकते, मगर किसी तरह हम लोगों को तुम साथ ख़ैरियत के दिल्ली पहुँचा देओगे तो मैं करोड़ों का धन, दौलत तुमही को सौंप दूँगा क्योंकि मेरा लड़का बच्चा नहीं है।

इतना कह कर सेठ दौलतख़ाँ रोता हुआ दौड़ कर फिर फ़क़ीर के पैर पड़ने लगा। तब नूर (फ़क़ीर के भेष में) ख़ुद बुड्ढे को पकड़ कर कहने लगी:—"देखिए, आप बुज़ुर्ग हैं और आप कोई फ़िकर न करें; मैं आप लोगों को सही सलामत पहुँचा दूँगा।"

इस प्रकार की और कई बातों के बाद कुल बेहोश उन्हीं के ऊँटों पर लाद कर, कुछ ऊँटों पर दौलतख़ाँ शेर